RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 1 अंक 12 मूल्य 20

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका
liverajsamand.com
हिन्दी मासिक पत्रिका
अगस्त 2018
पेज संख्या : 36 राजसमंद
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

काछबली-मंडावर :

शराब के विरुद्ध संघर्ष की कहानी

सरकार नहीं चाहती शराबबंदी @ 6

दैनिक भास्कर

ब्यावर

संघर्ष के तीन साल; सरपंच ने रीट की तैयारी छोड़ मंडावर को शराबमुक्त करने का बीड़ा उठाया और मार लिया मैदान

मण्डावर शराबबंदी अभियान के संघर्ष की कहानी, चुनाव लड़ने के दौरान महिलाओं ने शराब को लेकर बताई टीस और सरपंच बनने पर गांव से खदेड़ने का वादा कर बैठी प्यारी रावत.78 फीसदी लोगों ने अपने हस्ताक्षर का भौतिक सत्यापन करवाकर एक तरफा शराबबंदी के अभियान पर मुहर

भास्कर न्यूज | टॉडगढ़

पूरे देश भर में शराबबंदी को लेकर चर्चित मंडावर गांव की सरपंच प्यारी रावत के जज्बे व संघर्ष की दास्तान जबरदस्त है। जिसके चलते तीन वर्षों पढ़ाई छोड़कर तथा आगामी महीने में होने वाली अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट) की तैयारी बीच में छोड़कर पूरी ताकत मंडावर की इज्जत अस्मिता को बचाने के शराबबंदी अभियान में झोंक दी और 78 फीसदी लोगों ने अपने हस्ताक्षर का भौतिक सत्यापन करवाकर एक तरफा शराबबंदी के अभियान पर जनता की मुहर लगवाकर उन्होंने मैदान मार लिया। तीन वर्ष पूर्व मंडावर गांव में सरपंच पद के लिए चुनाव में 24 मजरों में फैले गांव में जनसंपर्क के दौरान शराब के प्रचलन की टीस महिलाओं ने बताई। महिलाओं और ग्रामीणों की टीस सरपंच प्यारी रावत के दिल में घर कर गई और ठान ली की सरपंच बनी तो मंडावर को शराब मुक्त करा कर ही दम लेगी। 24 जनवरी 2015 को सरपंच की बाजी तो जीत ली पर अब लक्ष्य बड़ा कठिन था। शराब मुक्त मंडावर का सपना देखने वाली सरपंच प्यारी रावत ने उचित अवसर की तलाश की। ऐसा ही हुआ 20 दिन बाद मंडावर गांव में आयोजित होने वाले महाशिवरात्रि मेले एवं भजन संध्या में अपना पत्ते खोले और मंडावर को शराब मुक्त मंडावर बनाने की बात कही और लोगों को शराब छोड़ने की अपील की। इस अवसर पर प्रथम प्रयास में 100 से अधिक लोगों के शराब छोड़ने हेतु संकल्प पत्र भरवाए गए। धीरे-धीरे अभियान पूरे मंडावर क्षेत्र में फैलाया गया। लोगों को जागरूक किया गया। सरपंच कार्यकाल के 3 वर्ष पूर्ण होने के 4 दिन पहले पूरा करके दिखाया।

सरपंच प्यारी रावत

20 दिन में कराना था मतदान, कराया 9 माह बाद

महिला दिवस पर मंडावर को शराब मुक्त करने का बीड़ा उठाया था। मंडावर शराब मुक्ति आंदोलन ज्ञापन में 20 मार्च को होने वाली लॉटरी रोकने तथा 1 अप्रैल से नया ठेका नहीं खोलने की मांग की थी परंतु आबकारी विभाग व प्रशासन ने इस अभियान को दबाने की मंशा के चलते हुए टालमटोल रवैया अपनाया। धरना, प्रदर्शन के चलते 25 अप्रैल को ज्ञापन में दिए गए हस्ताक्षरों का भौतिक सत्यापन करवाया। मंडावर के 78 फीसदी लोगों ने अपने हस्ताक्षर का भौतिक सत्यापन करवाकर एक तरफा शराबबंदी के अभियान पर मुहर लगा दी। शराबबंदी के भौतिक सत्यापन के 20 दिवस के अंतर्गत अंतिम मतदान करना आवश्यक था परंतु आबकारी विभाग की टालमटोल नीति एवं प्रशासन के ढुलमुल रवैया के चलते 20 दिवस के अंतर्गत अंतिम मतदान नहीं हो सका। इसके बाद करीब 9 माह बाद शराब बंदी के मतदान की तिथि काफी लंबे संघर्ष के बाद दी गई। सूचना के अधिकार से दबाव में आकर शराबबंदी को लेकर 6 जनवरी को आबकारी विभाग व प्रशासन की ओर से 20 जनवरी को मतदान कराने की घोषणा की। अंत में आए परिणाम में मंडावर शराब माफिया व आबकारी विभाग में प्रशासन से जीत गया।

संगठन आए थे आगे : मंडावर शराबबंदी आंदोलन को लेकर विभिन्न संगठनों ने पूर्ण सहयोग किया तथा गांव में रैली नुक्कड़ ,नाटक, गीत ,संगीत, जागरूकता संदेश के माध्यम से ग्रामीण जनता को जागरूक किया। अभियान में मजदूर किसान शक्ति संगठन देवडूंगरी, भास्कर सरोकार, अणुव्रत आंदोलन राजसमंद, पतंजलि योग समिति राजसमंद, राजस्थान रावत राजपूत महासभा जयपुर, क्षत्रिय रावत परिषद ब्यावर, रावत सेना ब्यावर, शहीद देवी सिंह नवयुवक मंडावर, चौबीस गांव समाज सुधार समिति, काछबली शराब मुक्त समिति, मगरा विकास मंच राजस्थान आदि संगठनों का अभूतपूर्व योगदान रहा।

सम्पादकीय

राजसमंद में श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीश, चारभुजानाथ, रूपनारायण धार्मिक आस्था के केन्द्र है, जहां वर्षभर देश-प्रदेश के विभिन्न श्रद्धालुओं का मेला लगा रहता है। श्रद्धा के केन्द्र पर भी प्रसाद की तरह धड़ल्ले से शराब बिक रही है। कई बार यात्रियों से भरी गाड़ियां शराब के कारण सड़क हादसे की शिकार हो जाती है। भीम-देवगढ़ क्षेत्र में शराब की बिक्री के कारण कई परिवारों को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती है। शराबी घर से बर्तन व खाने-पीने की वस्तुएं चुरा लेते हैं। काछबली एवं मंडावर पंचायत ने शराब की बोतल में डूबते परिवारों को नया जीवन प्रदान किया। शराबबंदी के बाद इन पंचायतों में सड़क हादसे,घरेलू झगड़े व पुलिस केस लगभग शून्य हो गए हैं। यहां के लोगों ने शराब नाम के राक्षस को मार दिया, जो यहां के युवाओं का जीवन समाप्त करने को आमादा था, मगर यह एक शुरुआत है। अभी तो अन्य आस पास के क्षेत्र में शराब का वहीं आलम है। काम धन्धे छोड़कर घर के जिम्मेदार मजदूर, किसान शराब के नशे में अपने बच्चों एवं पूरे परिवार के जीवन को नर्क बनाए हुए हैं। सरकार अपनी राजस्व प्राप्ति की भूख में इस क्षेत्र की जनता की दुदर्शा से बेखबर बनी हुई है। यहां की जनता को गांव गांव तक पक्की सड़क, कमीशनखोरी के बांध एवं न ही मुफ्त के शौचालय चाहिए। बल्कि अपने परिवार की खुशियां चाहिए, जो शराबबंदी की बदौलत मिल सकती है। अब क्षेत्र की जनता को इंतजार है ऐसे जनप्रतिनिधि का, जो लाचार जनता की जमीनी हकीकत को जानकर पूरे राजसमंद जिले को शराब मुक्त कर सकें। तभी काछबली व मंडावर के संघर्ष की सार्थकता है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** घरवाळो दारूड़ियो, कीतर चलाऊ गुजारो — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** शराब के विरुद्ध संघर्ष की कहानी — पेज - 6
3. **कवर स्टोरी 3 :** सरकार नहीं चाहती शराबबंदी — पेज - 9
4. **हमारी जिम्मेदारी :** भामाशाह की मदद से गांवों के परिदृश्य में विकास से जुड़ते नए आयाम — पेज -13
5. **माटी का लाल :** गौकुलानन्द ने जगाई थी शिक्षा की अलख — पेज- 15
6. **तीखी मिर्ची :** स्वागत करो नेताजी आए हैं — पेज - 17
7. **चिंतन जरूरी :** मध्याह्न पोषाहार - मन्तव्य और गन्तव्य — पेज - 20
8. **पुस्तक समीक्षा :** तुम्हारे नाम @ 6 दशक में समाज की तस्वीर — पेज - 22
9. **पाठक प्रतिक्रिया** — पेज - 24
10. **मेवाड़ी चौपाल :** अणथाक प्यार — पेज - 28
11. **कड़वा सच :** चप्पा- चप्पा, चस्पा- चस्पा — पेज - 29
12. **कविताएं** — पेज - 32
13. **खास खबरें :** चारभुजा से राजस्थान गौरवयात्रा का आगाज — पेज -34

घरवाळो दारुड़ियो, कीतर चलाऊ गुजारो

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

घरवाळो दारुड़ियो मली ग्यो। जेठ भी टुन रेवे। तीन साल वेइग्या ब्याव ने और दो छोरा छोरी जणी दीदा। ब्याव केड़े एक दन साताऊ नी निकल्यो। थोड़ा दन पेळा म्हारे पीहर वाळा गऊं मेल्या, पण यो दारुड़ियो वणी गवां ने वेची आयो और दारू पी ग्यो। अबे म्हारो न अणा दो टाबरा रो पेट कीतर भरूं। गाम में दारू बंद करावा लागा, तो म्हने अणी दारुड़िया घरवाळा रे हुदरवा री उम्मीद जागी, पण या दारु री दकान बंद नी वी। वोट देवा में काई घपळो कीदो, जो दारु री दकान बंद करावा में वोट कम पड़ी ग्या। अबे मुं तो नी घर री और न घाट री। अणी टाबरा रे कारण मुं मरी नी सकुं। काई करूं। अणी सरकार वाळा रे तो पइसाऊ मतलब है, भले ही मनक दारू पी पी न मर जावे। गरीबी, तंगहाली में कोई कनोइज नी है। गाम में सब गरीब है, कुण कनी मदद करें, जदी सरकार ही लुटवा लागी गी।

यह दर्दभरी दांस्तान है बरजाल निवासी कमलाबाई की, जिसने दो मासूम बच्चों के साथ शराबबंदी आंदोलन की भरी सभा पहुंचकर ये हालात बयां किए, तो हर कोई अवाक् रह गया। यह कहानी सिर्फ एक कमलाबाई की नहीं, बल्कि देवगढ़-भीम क्षेत्र की कई महिलाएं इसी तरह के किस्से अपने जेहन में दबाकर घुटन भरी जिन्दगी जीने को मजबूर है। जब कमलाबाई बेबाक बोलती रही कि एक दन तो भंवरु बा नी आता, तो दारुड़ियो जेठ म्हने मार देतो। सरकार वाळा नी हुणे, अबे मुं कठे जाऊं। गांव की ऐजीबाई, निर्मला देवी भी खुलकर बोली कि शराब में टुन वेईन हर रोज अणी सड़कां पे लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता, गालिया देता चाले। अबे गांव री लुगाया अर छोरियां रो अकेलो जावणो- आवणो मुस्कल वेई ग्यो। तभी हेमा देवी बोली मने पनिया ने पन्द्रा साल वेई ग्या, पण म्हारो घर वाळो दारु नी छोड़े। अबे दारु रा पीया नी मले तो म्हारे गऊं, मर्च-मसालो चुराइन ले जावे।

शराबी ने छीन लिया सुहाग

बरजाल की विधवा राजीबाई बोली कि 24 जनवरी 2016 री रात में पड़ोस में गालियां रो हाको हुणीन म्हारा घरवाळा शेषुसिंह उर्फ सेसासिंह रावत छत पे ग्या। गालिया देवा वाळा शेरसिंह ने हमजावा लागा, पण दारू रा नशा में शेरसिंह उल्टा म्हारे घरवाळा ने गाळा देवा लागो ग्यो। दारू रा नशा में दोड़ीन छत पे आई ग्यो। म्हारे घरवाळा ने धको देई दीदो, जो नीचे जाई पड़्या। पछे अस्पताल लेई ग्या, पण जतरे मरी ग्या। पछे पुलिस, सरकार वाळा आया। वणी दारूड़िया ने पकड़ीन लेई ग्या, पण म्हारो सुहाग नी रीयो। मुं विधवा वेई गी। अबे बुढ़ापा में मुं ऐकली कीतर गुजारो चलाऊं। कुण कनी मदद करें, जदी सरकार ही लुटवा लागी गी। म्हारे जस्या नराई लुगाया है, जो अणी दारू री शिकार वणी गी। अबे दारू री दकान बंद नी वी, तो टाबरा रो जीवणो मसकल वेई जाई।

काछबली में शराबबंदी की रोशनी से पूर्व अन्धकारपूर्ण चित्र

काछबली पंचायत में भी शराबबंदी के उजियारे से पहले शराब की लत से कई परिवारों की हालत अंधकारपूर्ण थी। शराब के नशे की लत ने किसी का सुहाग उजाड़ दिया था, तो किसी के बुढ़ापे का सहारा ही छीन लिया। कुछ परिवारों के मुखिया की जिन्दगी छीनने से कई मासूम बच्चों के पालन पोषण पर आज भी संकट है। विधवा महिलाओं ने खेती, मजदूरी से घर गुजारे के प्रयास किए। गरीबी के चलते न चाहते हुए विधवा मां को अपने मासूम बच्चों से मजदूरी करवानी ही पड़ी, जिससे उनका शिक्षण, खेलकूद के साथ सारा बचपन ही दांव पर लग गया। फिर भी गरीबी व आर्थिक तंगी से परिवार नहीं उबर पाए। काछबली में शराबबंदी से पहले कुछ ऐसे ही हालात है, जो बयां करते ये किस्से और कहानियां-

आंदोलन के दौरान गटूदेवी बोली :

वो नशे में छीन लेते थे मेरी मजदूरी, चुरा ले जाते बर्तन

चार दशक पहले मैं जब से शादी करके काछबली आई, तब से ही उन्हें (मेरे पति) शराब की लत थी। खुद मजदूरी करते, मगर कमाई शराब पीने में खप जाती। इसी बीच तीन बच्चे जन्म गए, मगर शराब के नशे में परिवार से उनका कोई वास्ता नहीं रहा। सिवाय उठने, बैठने व खाने के। पहले तो वे जितना कमाते, उसी से पी जाते, मगर बाद में जगह कमाने में निढाल हो गए, तो मैं जो दिनभर में मजदूरी कर कमाकर लाती, वहीं रुपए छीनकर ले जाते। कहीं छुपाती, तब मुझे पीटते तो रुपए देने ही पड़ते। अंतिम दौर में हालात ऐसे हो गए कि रुपए नहीं मिले, तो घर से बर्तन, जेवर ही चुराकर बेच आते और शराब ले जाते। फिर भी क्या करते... आखिर सुहाग था। मैंने इसे नीयती ही मान लिया और उसी अनुरुप जीना सीख लिया। ऐसी तंगहाली में मेहनत मजदूरी कर परिवार का पालन पोषण किया।

यह कहानी है काछबली की विधवा गटूदेवी पत्नी नारायण सिंह रावत की। इसी संघर्ष के बीच बेटी संगीता (23) की शादी की, जो अब ससुराल में है और दोनों बेटे सरदार व दिनेश सूरत में मजदूरी कर रहे हैं। अत्यधिक शराब सेवन से पति नारायणसिंह का लीवर ही डेमेज हो गया और मृत्यु हो गई। अब विधवा अकेली काछबली में रहकर पेट पाल रही है।

छूट गई बच्चों की पढ़ाई

खेलने, कूदने व पढ़ने की उम्र में तंगहाली के चलते सरदार (24) को किशोर उम्र में मजदूरी करने जाना पड़ा, जो कक्षा 9 तक ही पड़ सका। बेटी संगीता की शादी के बाद कर्ज चढ़ने व आर्थिक तंगी की वजह से दिनेश (19) को भी 10वीं पास कर मजदूरी करने सूरत जाना पड़ा। दोनों बेटे सूरत मजदूरी कर रहे हैं, मगर चाहते हुए भी दोनों बच्चे नहीं पढ़ पाए।

विधवा कमला की कहानी

कमाने वाला नहीं, अब तो तंगी से हर त्यौहार में शोक

इंसान के सुबह उठते ही खर्च का कांटा चालू हो जाता है, जो वापस सोने के बाद ही बंद होता है। उठते ही चाय, नहाने, धोने, आने-जाने, खरीदने व बात करने के लिए भी जेब गरम चाहिए। पालनहार की मृत्यु के बाद विधवा के लिए घर गुजारा चलाना बहुत कठिन है। तंगी के चलते विधवा के घर त्यौहार भी शौक की तरह ही मनते हैं। विधवा परिवार के हालात काछबली की विधवा कमला देवी रावत (34) ने बयां किए। उसके पति विरेन्द्रसिंह भी शराब के आदी थे, जिनकी भी शराब के नशे के दौरान ही सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। तब एक बच्चा नेहपाल (9) गर्भ था, जबकि युवराज (16) व ललिता (13) भी बहुत छोटे थे। गर्भवती के दौरान ही पति का निधन होना, उस पर वज्रपात के समान था। ऐसे में दो साल तक विधवा सुनीता घर व खेती के अलावा कुछ नहीं कर पाई और खर्च तो लगातार बढ़ता ही गया। कमाई न होने व खर्च बढ़ने से सिर पर कर्ज चढ़ता गया, जो सात साल से लगातार खेती व मजदूरी करने की, तब भी कर्ज से मुक्ति नहीं मिल पाई। अब ऐसी तंगहाली में परिवार का गुजारा कैसे करें। हर वक्त मन, मस्तिष्क में यही रहता है कि क्या, कैसे पैसा कमाऊ। फिर भी मेरा ध्येय है कि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो।

चाहे जेल क्यों न जाना पड़े

घर के पास शराब की दुकान। उठते, बैठते और सोने के दौरान ले आते बोतल और पी जाते। मेरा सुहाग उजड़ा, परिवार की खुशियां धूमिल हो गई, मगर अब मेरे बच्चों को इसके पास भी नहीं फटकने दूंगी। शराब की दुकान बंद होनी ही चाहिए। मेरे बेटे ही नहीं, बल्कि हर युवा में भी इससे नशे की प्रवृत्ति बढ़ेगी, तो भविष्य में हालात और भी बदत्तर हो जाएंगे।

शराब के विरुद्ध संघर्ष की कहानी

मंडावर गांव को मिली अंतराष्ट्रीय पहचान

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजस्थान के राजसमंद जिले में भीम तहसील का मंडावर कुछ सालों पहले गुमनामी के अंधेरे में था, पर गांव की तकदीर व तश्वीर बदली सरपंच प्यारी कंवर रावत ने। सरपंच चुनाव में चुनावी वादा किया कि गांव को फर्श से अर्श पर ले जाएगी। इस हेतु पूरे गांव में घोषणा पत्र का विजिटिंग कार्ड बनाकर पूरे गांव में बांटा। सबसे खास था व्यसन मुक्त गांव यानि शराब मुक्त गांव का वादा। लोगों को चुनावी जुमला लग रहा था। क्योंकि इससे पूर्व राजस्थान में कोई गांव शराब मुक्त नहीं हुआ था। फिर शराबबंदी का सपना साकार करने के लिए जो पहल और संघर्ष देखने को मिला, जिससे मण्डावर गांव का नाम देश में चर्चित हो गया। पूर्णतया शराबबंदी कराना बेहद कठिन कार्य था, पर वो दिन सरपंच चुनाव के तीन वर्ष होने के चार दिन पहले 20 जनवरी 2018 को सच साबित हो गया। शराबबंदी संघर्ष से चर्चित मण्डावर मीडिया की हेडलाइन बन गया। पूरे देश में मण्डावर की नजीर पेश की जाने लगी। अंतराष्ट्रीय स्तर पर मीडिया में मण्डावर छाया रहा।

मंडावर में शराबबंदी की जंग जीतने के बाद ग्रामवासी।

तीन साल का संघर्ष ए शराब मुक्त का सपना पूरा

कार्यभार ग्रहण के दिन से शराबबंदी हेतु किए चुनावी मुद्दे पर सरपंच प्यारी कँवर ने अपना मूड बना लिया। इसके लिए आवश्यक जानकारियां जुटाना शुरू कर दिया। सूचना के अधिकार के जरिये नियमों को जाना व आबकारी एक्ट के नियमों को जानकर बारीकी से अध्ययन कर मुहिम छेड़ दी। आबकारी एक्ट के अनुसार पंचायत के कुल मतदाताओं के 20 फीसदी से अधिक मतदाताओं का निर्वाचन विभाग की मतदाता सूची में ही हस्ताक्षर या अंगूठा लगाकर तत्कालीन जिला कलक्टर अर्चना सिंह को ज्ञापन दिया। शराब बंदी के ज्ञापन पर चारों तरफ चर्चा का दौर शुरू हो गया। फिर तत्कालीन भीम उपखंड अधिकारी नरेंद्र कुमार वर्मा को शीघ्र मतदान कराने की मांग की। मतदान की तिथि घोषित नहीं करने पर उपखंड कार्यालय भीम में धरना दिया। लगातार संघर्ष के बावजूद मतदान की तारीख तय नहीं होने पर सरपंच प्यारी कँवर ने जोधपुर न्यायालय में याचिका दायर कर दी। करीब दो साल तक कोर्ट में नियमित सुनवाई होती रही पर आबकारी विभाग व प्रशासन के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। लगातार संघर्ष के चलते पंचायत के अन्य कामकाज भी प्रभावित होने लगे। मन में कसक थी काश चुनाव हो जाए। अनवरत प्रशासन से संपर्क साधे रखा। तब तक उपखंड अधिकारी व जिला कलेक्टर का तबादला हो गया। नए कलक्टर प्रेम चंद बेरवाल व उपखंड अधिकारी भंवर लाल जनागल से व्यक्तिगत संपर्क कर चुनाव की दिनांक देने की मांग की, पर कोई असर नहीं हुआ।

एक एक हस्ताक्षर व अंगूठे का हुआ भौतिक सत्यापन

शराबबंदी हेतु ज्ञापन में किये गए हस्ताक्षरों का उपखंड अधिकारी के निर्देशन में अटल सेवा केंद्र मण्डावर में एक एक हस्ताक्षरकर्ता व अंगूठे लगाने वालों का भौतिक सत्यापन करते हुए मिलान किया गया। ज्ञापन में कुल 2711 मतदाताओं में से 723 मतदाताओं ने हस्ताक्षर किए थे। उसमें से 646 मतदाताओं यानि 93 फीसदी लोगो ने पहुंचकर भौतिक सत्यापन करवाया। फिर मतदान की तारीख तय नहीं होने पर सरपंच प्यारी कँवर के पति जसवंत सिंह ने सूचना के अधिकार के तहत 24 दिसम्बर 2017 को मण्डावर में शराब बंदी मतदान में देरी जानने का कारण पूछा तो 27 दिसम्बर को मतदान कराने का जवाब आया। 4 जनवरी को प्रशासन में हरकत में आया और उपखंड अधिकारी व जिला कलक्टर ने तय करते हुए 20 जनवरी 2018 को मतदान तिथि घोषित कर दी।

मतदान की तिथि घोषित होते ही बदली फिज़ा

मंडावर में शराबबंदी को लेकर मतदान तिथि घोषित होने के बाद मंडावर की फिजा बदल गई। सरपंच प्यारी ने सौगंध खाई जब तक शराबबंदी नहीं हो जाए तब तक एक समय भोजन करेंगी। 15 घंटे लगातार एक एक मतदाता से मिलकर मतदान के लिए अपील करेगी। शराबबंदी की मुहिम को जीतने के लिए शराबबंदी की भंवर सिंह रोहिड़ा के नेतृत्व में कमेटी बनाई गई, जिसमें संयोजक लुम्बसिंह मण्डावर, सलाहकार भंवरसिंह कनियात, सर्कल अध्यक्ष नेतसिंह कनियात, पूरण सिंह डूंगावत, प्रेमसिंह सोमेश्वर, जसवंत सिंह खजुरिया, सुशीला देवी, कृष्णा चौहान के नेतृत्व में कार्य को गति दी।

कठिन लक्ष्य रणनीति से पाया

शराबबंदी के लिए कुल मतदाताओं में से 51 फीसदी मतदाताओं का मत पक्ष में पड़ने पर वैध होता है। मण्डावर में जिस मतदाता सूची को माना गया जो पुरानी थी, जिसमे से 2711 मतदाताओं में से 150 से अधिक मतदाता स्वर्गवासी हो गए थे और 60 से अधिक बहन बेटियां शादी होने से अपने सुसराल चली गई। एक हजार से अधिक मतदाता देश भर के अन्य शहरों में व्यवसाय करते हैं। इस तरह में गांव में मौजूद मतदाता 1500 के आस पास थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि शराब बंदी की मुहिम को जीतने के लिए 1383 पक्ष में वैध मतों की आवश्यकता थी। मत पत्र में हा व नहीं पर मतदान होने से अनपढ़ महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। मतदान में 1789 मत पड़े, जिसमें से 1383 के मुकाबले 1623 मत शराबबंदी के पक्ष में पड़े। 111 मत विपक्ष में पड़े और 55 मत खारिज हो गए। जीत की खबर पूरे गांव खुशी का माहौल बन गया।

मंडावर में शराबबंदी को लेकर भीम उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपते सरपंच, जिला परिषद सदस्य व ग्रामवासी।

मंडावर में शराबबंदी को लेकर अतिरिक्त जिला कलक्टर को ज्ञापन सौंपते सरपंच, जिला परिषद सदस्य व ग्रामवासी।

मण्डावर बना ब्रेकिंग न्यूज, देशभर से आए लोग

शराबबंदी ने मंडावर को ऐसा नाम दिया कि हर न्यूज़ पर हेडलाइन और टीवी न्यूज़ चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज़ बन गया। मंडावर की चर्चा पूरे देश में होने लगी। मतदान के दिन पूरे दिनभर 50 से अधिक मीडिया कर्मी पल पल की खबर अपडेट करते नजर आए। मण्डावर शराबबंदी की चर्चा मीडिया, सोशल मीडिया के जरिये पूरे देश में फैल गई। इसको लेकर केरल, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम, झारखंड, उत्तरप्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू, उत्तराखंड के विभिन्न कॉलेज के स्टूडेंट व समाजसेवी पहुंचे और मुहिम में साथ दिया। इसी तरह सूचना का अधिकार, महानरेगा जैसे अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले मजदूर किसान शक्ति संगठन के कार्यकर्ता शंकरसिंह रावत के नेतृत्व में अमिता चौहान, लक्ष्मी देवी, कार्तिक नुक्कड़ नाटक, गीत गाकर, ढोल बजाकर लोगों को जागरूक किया। इससे शराबबंदी के चुनाव को रोचक बनाने में इनकी भूमिका सराहनीय रही।

महिलाओं को मतदान दिया अग्रिम प्रशिक्षण

मतपत्र में चुनाव चिन्ह नहीं होने और मतदान हां और नहीं पर करने की प्रक्रिया होने से समस्या का सामना करना पड़ा। गांव की अधिकतर महिलाएं अनपढ़ होने की समस्या से निजात पाने के लिए मतदान का अग्रिम प्रशिक्षण दिया गया। जब तक महिलाएं सही मतदान करना सीख गई, तब तक प्रशिक्षण जारी रहा।

मजदूर किसान शक्ति संगठन का मिला पूरा साथ

कर्णावट व रावत समाज का अविस्मरणीय योगदान

अणुव्रत आंदोलन प्रवक्ता डॉ महेंद्र कर्णावट ने अनवरत रूप से मण्डावर पहुंचकर जनजागृति का काम किया, जो भी अतुल्य रहा। इनके साथ महेश चंद कासट आदि का भी योगदान रहा। इसके साथ गांधी सेवा सदन राजसमन्द के विद्यार्थियों ने रैलियां निकालकर आंदोलन में साथ दिया। अणुव्रत आंदोलन के तहत घरों की दीवारों पर स्लोगन व नारे लिखवाए। रावत राजपूत समाज ने पूरा साथ दिया। महासभा के तत्कालीन वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरिसिंह सुजावत, संयोजक गोपाल सिंह पीटीआई, संपादक भगवानसिंह चौहान, केसरसिंह सुजावत, भीम के पूर्व सरपंच मोहनसिंह, जयरामसिंह गहलोत, क्षत्रिय रावत परिषद संस्थापक सतवीर सिंह लगेतखेड़ा, प्रदेश अध्यक्ष आनंदसिंह सुरडिया, महामंत्री भगवानसिंह सुजावत, विक्रांतसिंह चौहानए, भगवानसिंह सनवा, सुरेंद्रसिंह धामावत, रावत सेना संस्थापक महेंद्रसिंह अतीत मंड, बृजपालसिंह कालिंजर, मोहितसिंह भीम, सुधीर सिंह भीम आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया। इसके अलावा सैनिक मोहन सिंह थानेठा, कुशालसिंह मालावत, देवीसिंह कानावत, जिला परिषद सदस्य डाऊ सिंह टॉडगढ़, दिवेर सरपंच भंवर सिंह आदि ने भरपूर सहयोग दिया।

चुन्नासिंह ने दिया 2 लाख का सहयोग

शराबबंदी अभियान में दो लाख रुपए गांव के सेवानिवृत वरिष्ठ अध्यापक चुन्नासिंह चौहान ने दिए। चुन्नासिंह का कहना है कि शराबबंदी जैसे पुनीत कार्य में सहयोग मेरे लिए सौभाग्य की बात है। शराबबंदी प्रयास सफल होना भी खुशी की बात है। 20 हजार जिला उपाध्यक्ष ओबीसी भाजपा, प्रोपटी डीलर लुम्बसिंह मण्डावर ने तथा स्थानीय निवासी पटवार संघ जिलाध्यक्ष मिठूसिंह चौहान ने 11 हजार रुपये की सहयोग राशि प्रदान की। इसी तरह भंवरसिंह कनियात, सोहनसिंह, पंवार पीथडा, आसूसिंह धाडीयात ढाक का चौड़ा ने भी आंशिक सहयोग किया।

मीडिया ने बनाया इसे अपना अभियान

शराबबंदी अभियान को लेकर विभिन्न मीडिया द्वारा जागरूकता अभियान चलाया। दैनिक भास्कर ने भास्कर मुहिम व राजस्थान पत्रिका ने पत्रिका सरोकार नाम से सिलसिलेवार खबरें प्रकाशित की। भास्कर टीम में उदयपुर से चंद्रशेखर गुर्जर, राजेन्द्रसिंह झाला, राहुल सोनी, राजसमन्द से नरेंद्र पूर्बिया, नरपतसिंह चौहान, हेमन्त दाधीच, फोटोग्राफर उदयगोपाल, देवगढ़ से कमल शेख, टॉडगढ़ से कुशाल सिंह रावत, जवाजा से भगवानसिंह रावत मंडावर आए। इसी तरह राजस्थान पत्रिका के जितेंद्र पालीवाल, लक्ष्मणसिंह राठौड़, देवगढ़ से मोहित माहेश्वरी, भीम से मुकेश सिंगानिया ने शानदार कवरेज किया। दैनिक नवज्योति से सुरेश भाट, जयंत पालीवाल, बरार से ललित देवड़ा, टॉडगढ़ से विनोद पडियार, देवगढ़ से लोकेंद्र सिंह, प्रात:काल से मुबारिक शुक्रिया, राकेश शर्मा देवगढ़, जागरूक टाइम्स नरेंद्रसिंह खंगारोत, राष्ट्रदूत में हीरालाल भाट, नगर प्रभा में राधे श्याम दर्जी, स्वतंत्र पत्रकार में राजमल शर्मा, हेमन्त ब्यावर, दिनेश श्रोत्रिय, लक्ष्मणसिंह रावत, दुर्गा प्रसाद सिंगानिया, रामप्रकाश लौहार, भीमराज कोठारी, प्रकाश पालीवाल आदि ने प्रमुखकता से खबरें चलाई।

शराबबंदी के मतदान के बाद भी किया संघर्ष

20 जनवरी को शराबबंदी के बाद भी मंडावर में पूर्णतया शराबबंदी लागू कराने के लिए दर दर की ठोकरें खानी पड़ी और इसके लिए राजसमंद, उदयपुर के चक्कर काटने पड़े। लगातार मांग पर जिला कलक्टर ने 1 अप्रैल 2018 से पूर्ण शराब बंदी का आदेश जारी किया। इसी के साथ मंडावर पूर्णतया शराब निषेध घोषित कर दिया गया। कानूनन रूप से मंडावर में शराब परिवहन करना, स्टोरेज करना, बिक्री करना, खरीदना, उत्पादन करना सभी पर कानूनन रूप से रोक लगा दी गई। इससे मंडावर में काफी परिवर्तन देखने को मिले और लोगों की शराब की आदत छूटने लगी है। कानूनन प्रतिबंध के बाद सामाजिक रुप से भी गांव में प्रतिबंध लगाए गए।

जिन्होंने लगाया एड़ी चोटी का जोर

मंडावर में शराबबंदी में पूरे गांव ने एकजुटता दिखाई थी। जसवंतसिंह मण्डावर, जिला परिषद सदस्य हीरा कंवर चौहान, नारायणसिंह काछबली, प्रेमसिंह सोमेश्वर, मिठूसिंह चौहान, लुम्बसिंह, गोविंदसिंह, मूलसिंह, जसवंतसिंह खजुरिया, भंवर सिंह, पूरणसिंह, सूबेदार मोहनसिंह, नरेंद्रसिंह मालातो की गुआर, कुलदीपसिंह सिरोला, भंवरसिंह मालातो की गुआर, किशनसिंह डूंगावत, पृथ्वीराज सिंह, प्रह्लादसिंह ढाक, आसुसिंह धाक, राजेन्द्रसिंह चतरपुरा, गोपालसिंह टेलर, दिलीप सिंह, ललितकिशोर सिंह, भूपेंद्रसिंह, गोकुलसिंह, सुशीला देवी, कैलाश सिंह, कृष्णा चौहान, सायर देवी, चंचल जैन, छगनी देवी, लक्ष्मी देवी, वार्डपंच भंवरी देवी, झमकूदेवी, पानी देवी आदि ने भरपूर सहयोग दिया।

पतंजलि योग पीठ ने दिया शराबबंदी का संदेश

पतंजलि योगपीठ राजसमंद के पदाधिकारियों ने पतंजलि युवा भारत अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह खोखावत के नेतृत्व में मंडावर पहुंचकर जागरूकता का संदेश दिया। गांव में रैली निकाल कर जागरूकता का संदेश प्रसारित किया। इस दौरान उनके साथ रामलाल रेगर आदि मौजूद थे। नगरपालिका देवगढ़ तत्कालीन उपाध्यक्ष रेखा सोनी, कार्यकर्ता महेंद्र कलाल ने गांव गांव घूमकर मतदाताओं को जागरूक किया तथा मतदाताओं को मतदान केंद्र तक स्वयं बिठाकर लाई।

जान से मारने की धमकियांए झूठे प्रकरण

शराबबंदी के दौरान सरपंच प्यारी कँवर, हीरा कँवर, जसवंतसिंह व नारायण सिंह को जान से मारने की धमकियां मिलती रही। कई बार प्रचार की गाड़ियों को रोका गया। अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए गाली गलौच हुई। झूठे प्रकरण बनाये गए। शराब माफिया द्वारा शराब बंदी अभियान को रोकने के लिये कई हथकंडे अपनाए।

यह है शराबबंदी के नियम

1. संबंधित ग्राम पंचायत, नगर निकाय के कुल मतदाताओं में से कम से कम 20 फीसदी मतदाताओं द्वारा मतदाता सूची में ही हस्ताक्षर या अंगूठा लगाकर जिला कलक्टर को ज्ञापन देना।
2. कुल मतदाताओं के 20 फीसदी भौतिक सत्यापन आवश्यक है। ज्ञापन में किए गए हस्ताक्षरों या अंगूठे के भौतिक सत्यापन उपखंड अधिकारी के देखरेख में नियत तिथि पर निर्धारित स्थान पर पूर्ण दिवस में होता है।
3. भौतिक सत्यापन सही पाए जाने पर उपखंड अधिकारी व जिला कलक्टर विचार विमर्श करके आबकारी विभाग को मतदान कराने की सिफारिश करता है और निर्धारित होने पर मतदान होता है।
4. मतदान में कुल मतदाताओं का 51 फीसदी मत शराबबंदी के पक्ष में मतदान होने पर अगले वित्तीय वर्ष से उक्त गांव में ठेका आवंटित नहीं किया जाता। स्थायी रूप से ठेका बंद कर दिया जाता है। मतदान में केवल हा व नही पर मतदान होता है। चुनाव चिन्ह नही होता है।

मंडावर सरपंच का परिचय

प्यारी कँवर रावत

एमए (हिंदी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान) बीएड

वर्तमान पद :

महिला प्रदेशाध्यक्ष - राजस्थान रावत राजपूत महासभा
सहसंयोजक - भाजपा शक्तिकेन्द्र भीम
मंडल उपाध्यक्ष - भाजपा महिला मौर्चा मंडल भीम
ब्लॉक उपाध्यक्ष - सरपंच संघ भीम
जिला प्रवक्ता, कोषाध्यक्ष - सरपंच संघ राजसमन्द
महिला प्रभारी - मगरा विकास मंच राजस्थान

संपर्क : मण्डावर, तहसील भीम, जिला राजसमन्द (राजस्थान) 313341, मो. 9610028051, 9829204848
ईमेल : jaswant.mandawar@gmail.com
pyari.mandawar@gmail.com

रेलवे स्टेशन- पवन ऊर्जा से फिर चमकेगा मंडावर

शराबबंदी के बाद ब्रॉडगेज रेल लाइन बिछने व पवन ऊर्जा संयंत्र लगने के बाद फिर मंडावर देश में खास पहचान बनाएगा। पवन ऊर्जा का सफल परीक्षण हो चुका है और ब्रॉडगेज का कार्य भी प्रगति पर है।

वर्षा की भविष्यवाणी से जुड़ा मेला लगता है यहां

मण्डावर पंचायत क्षेत्र के वन खंड में वर्षा की भविष्यवाणी से जुड़ा केरून्डा बाबा रामदेव का मेला प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया को भरता है, जो प्रसिद्ध है। वनखंड में गोरमघाट पर्यटन के लिहाज से महत्वपूर्ण है।

हर घर नींबू पौधा अभियान : सरपंच प्यारी कंवर के द्वारा आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर नींबू पौधा को हर घर में लगाना का लक्ष्य तय किया। शुरुआत में विवाह समारोहए मांगलिक कार्यक्रम, जन्मोत्सव पर नींबू पौधा भेंट किया। साथ ही प्रत्येक परिवार को ग्यारह पौधे लगाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं।

राजस्व विवाद मुक्त पंचायत : मंडावर पंचायत के सभी राजस्व विवाद निपटा देने से राजस्व मुक्त पंचायत का दर्जा मिल गया है। इसका श्रेय भी सरपंच प्यारी कँवर को जाता है।

स्वच्छ शक्ति का बुलावा : मंडावर में स्वच्छ भारत मिशन में किए गए कार्यो से प्यारी कँवर ने लखनऊ में आयोजित स्वच्छ शक्ति 2018 कार्यक्रम में भाग लिया था। केन्द्र सरकार द्वारा राजस्थान की चुनिंदा 16 सरपंचों को आमंत्रित किया गया था।

महिला आयोग द्वारा सम्मानित : मंडावर में बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य, शराबबंदी, श्रमिक कल्याण, स्वच्छ भारत मिशन, महिला भागीदारी पर किए गए कार्यो पर राजस्थान राज्य महिला आयोग द्वारा जयपुर में प्यारी कँवर को सम्मानित किया गया।

करवा चौथ पर शौचालय गिफ्ट : मंडावर में करवा चौथ सरपंच प्यारी कंवर की प्रेरणा से मांगूसिंह ने अपनी पत्नी को करवा चौथ पर शौचालय गिफ्ट किया। यह मामला पूरे देश में चर्चित रहा। इस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ट्वीट किया था।

सरकार नहीं चाहती शराबबंदी

महात्मा गांधी ने कहा था कि 'शराब की बोतल में मौत की परछाई दिख पड़ती है। उसकी एक एक घुंट में रौरव नरक के कीड़े बिलबिलाते हैं। आप उसे जरा चखिये भर, बस वह आपको चोरी करना सीखाएगा, आपसे लुटपाट कराएगी, व्यभिचार का पाठ पढ़ाएंगी और खून करना बतलाएगी। एक बार शराब को अपने घर में आने भर दीजिए, आपकी स्त्री के चेहरे की प्रसन्नता उड़ जाएगी। जो बच्चे आनंद से नाचते हैं, उसी क्षण रोने-चिल्लाने लगेंगे। यदि मुझे एक घंटे के लिए सारे हिन्दुस्तान का तानाशाह नियुक्त किया जाए, तो मैं सबसे पहला काम यह करूं कि शराब की एक एक दुकान को बिना कोई मुआवजा दिए बंद कर दूं। मेरे विचार से शराब का सवाल एक बढ़ती हुई सामाजिक बुराई को रोकने का सवाल है और राज्य को जो भी अवसर मिले, उसे इसके विरुद्ध में सारे उपाय किए जाने चाहिए, जो किए जा सकते हैं।'

गांधीजी के सिद्धांतों के नारे लगाकर अपनी कुर्सी तक पहुंचने वाली सरकारें उन्हीं के शराबबंदी के विचारों को मोटे राजस्व की चाह में अनदेखा कर देती है। शराबबंदी के सत्याग्रह को लेकर जहां गरीब महिलाएं, बच्चे, युवा व बुढ़े अपनी आवाज बुलंद करना चाहते हैं, तो उनकी आवाज सरकार के तानाशाही नियमों की आड़ में दब जाती है।

आदिकाल से सुरापान की प्रथा रही, मगर पहले यह सिर्फ अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित थी। अब आमजन के हाथों में पहुंच गई और सामाजिक सरोकारों में भी परोसा जाने लगा। आजादी के बाद राजस्व के लोभ में सरकारों ने जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया। ऐसे में आम आदमी शराब का शिकार होकर न सिर्फ आर्थिक रूप से कंगाल हो गया, वरन् अपनी शारीरिक क्षमताओं को भी खो बैठा।

रावत जाति बहुल गांव काछबली (भीम) में 20 फरवरी 2016 को महिलाओं ने शराब के विरुद्ध आरपार की लड़ाई का ऐलान कर दिया। फिर सरपंच गीतादेवी के नेतृत्व में महिलाओं ने लंबी लड़ी। बाद में काछबली पहली शराबमुक्त पंचायत बन गई और बाद में मंडावर पंचायत भी शराबंदी की मुहिम में सफल रही। उसके बाद भीम तहसील की थानेटा, ठीकरवास, बरजाल, बरार, राजसमंद की राज्यावास पंचायत ने शराबंदी के लिए जिला कलक्टर को ज्ञापन दे दिए, मगर प्रशासन द्वारा अग्रिम कार्रवाई नहीं की गई। इनमें काछबली की गीतादेवी व मंडावर की प्यारीदेवी प्रमुख थी।

मंडावर में शराबबंदी को लेकर ग्रामवासियों में शराब दुकान बंद कराने की इतनी दीवानगी थी कि नशे में धुत कई मतदाता मेरे पास आए, गले मिले और कहा मैंने शराब पी है, पर वोट आपको ही दूंगा। मैंने पूछा क्यो ? तो बोले- मेरी बालपीढ़ी इस बुराई से बचे और आप ही की तरह डॉक्टर बने। इसलिए मैं शराब की दुकान बंद कराने के पक्ष में ही वोट दूंगा। जब ये लोग मेरे से गले मिलते तो मेरे साथी डरते कि कहीं कोई गलत हरकत नहीं कर दें, पर किसी ने ऐसा नहीं किया। यह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि व्यक्ति नशे में भी कुछ अच्छा करना चाहता है। मंडावर सरपंच प्यारीदेवी ने भी दिन रात श्रम किया।इसी का परिणाम है कि मुट्ठीभर लोगों ने अपनी संगठित शक्ति के सहारे इतिहास की धारा को बदल दिया। मंडावर शराबबंदी की यह अनुगूंज सर्वत्र व्याप्त हो, स्वस्थ्य समाज, नशामुक्त समाज के रूप में आगे बढ़ रही है।

बरजाल में शराबबंदी के मतदान के परिणाम आए, जिसमें 130 मतों से हम बाजी हार गए। शराब का ठेका बंद कराने का जनमत हार गए। यह सबकुछ कतिपय कार्मिकों के छल का ही परिणाम था, जिन्होंने उल्टे मतपत्र अनपढ़ महिलाओं को पकड़ा दिए, जिसकी वजह से कई मत खारिज हो गए। तब लोग उग्र हो गए और बोले हमें जबरन हराया गया है, छल हुआ है। कुछ ही पल में पूरा गांव सड़क पर उतर आया। प्रशासन के विरुद्ध नारे लगाने लगे और मारपीट के लिए उतारू हो गए। तब मैं भी ठहर सा गया कि क्या करूं। कैसे भीड़ को रोके। फिर मैं तेज स्वर में बोलते हुए कहा कागज पर लड़ाई जरूर हार गए, पर मन से नहीं हारे हैं। प्रशासन कुछ भी कर लें, शराब ठेका एकता को नहीं तोड़ पाएगा। चुनावकर्मियों का प्रहार हमारी एकता को नहीं तोड़ पाएगा। इस संक्षिप्त वक्तव्य के बाद मैं अन्य सहयोगियों के साथ भीड़ के सामने हो गया। हम हाथ जोड़कर उत्तेजित नहीं होने, हिंसा नहीं करने का अनुरोध तीन घंटे तक करते रहे। पूरा प्रशासन मूक दर्शक बना अटल सेवा केंद्र में नजरबंद रहा। लोगों की एक ही आवाज, एक ही भाषा- हमारे साथ छल किया है। फिर भी बरजाल में शराबबंदी के नेतृत्व वर्ग और मैं स्वयं अपनी अग्नि परीक्षा में सफल रहा।

अहिंसा की ताकत हिंसा से भी बड़ी होती है। यह बरजाल गांव ने साकार कर दिखाया, लेकिन मतदान में जिन कर्मियों ने छल किया। उन्होंने शाश्वत मूल्यों को न सिर्फ नकारा है, वरन् गरीबी का उपहार भी किया। बरजाल में शराबबंदी के लिए जो मतदान हुआ, वह जनमत जानने के लिए था, न कि विधायक-सांसद चुनने के लिए। 74 फीसदी मत प्राप्त करने के बाद भी प्रचलित कानून के कारण शराबबंदी नहीं होना क्या स्वयं कानून की क्रूरता नहीं है ? ऐसे कानूनों को बदला जाना चाहिए, जो जनहित में जनमत का सम्मान नहीं करते। जनमत की अवहेलना आत्मघाती कदम होता है।

कानून के मुताबिक भले ही घोषित रूप से शराबबंदी सफल नहीं रही हो, मगर प्रबल जनमत के सामने मतदान परिणाम भी बौना साबित हुआ है। बरजाल गांव में शराबबंदी के लिए आज भी असहयोग सत्याग्रह जारी है, जिसके परिणाम स्वरुप शराब का ठेका नहीं खुल पाया है। यह लोकतंत्र के लोक की विजय है और तंत्र की हार है।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट
जिले के शराबबंदी आंदोलनों में प्रमुख भूमिका
गांधी सेवा सदन राजसमंद, मो. 94141-72325

बच्चे पी रहे दारू, कौन है जिम्मेदार?

नशा नर्क का द्वार है, ऐसे ही नहीं कहा गया है। व्यसन मुक्त समाज की स्थापना के लिए सदियों से समाज प्रयत्न कर रहा है। कैसे भी करके लोग नशे की लत को छोड़ दें, पर कितने ही बहाने लोगों के पास है, नशा करने के।

शायरों ने भी नशे पर अपनी कलम चलाई है। हरिवंशरायजी बच्चन ने मधुशाला लिखी, जो काफी प्रसिद्ध हुई। नशे में कौन नहीं है, मुझे बताओ जरा... हुई महंगी बहुत ही शराब थोड़ी थोड़ी पीया करो... वगैरह। धर्म को नशे से जोड़ कर नशेड़ियो को और तर्क देने के कई बहाने दे दिए। छान भाई छान मत किसी की मान, निकल जाएंगे प्राण तो फिर कौन कहेगा छान... साधु, सन्तों, जोगियों ने भी चिलम गांजा, भांग के नशे को समाज में मान्यता दी। ईश्वर भक्ति में परमात्मा को पाने में ध्यान, धुन और धुनी रमाने वाले ओगड़ पंथियो ने नशे का सहारा लिया। कहते हैं कि जब देवताओं ने इसे पीया तो सोमरस हो गया, दानवों ने पीया तो सुरा पान। अब लोग इसे शराब, वाईन, दारू, रम सरीखे कई नाम से पी रहे हैं।

लोग दवा के साथ दारू शब्द जोड़ इससे हर गम का ईलाज ढूँढते रहे, मगर मैंने जितने भी नशेबाजों को देखा बर्बाद होते ही देखा है। शराब ने ना जाने कितने घरों को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया। कहने में ये एक चुटकला है, मगर इसमें सच 100 प्रतिशत है। एक सज्जन शराब दुकान पर खिड़की में हाथ डाल सेल्समैन से कहा कि आपने खिड़की बहुत छोटी बनाई। इसमें से शराब की बोतल कैसे बाहर निकलेगी, तो सेल्समैन ने चुटकी लेते कहा महोदय इस खिड़की से लोगों के ट्रैक्टर, ट्रोली, खेती, बाड़ी घर बार, झोपड़े घूस गए। एक बोतल की क्या मजाल जो बाहर नहीं निकल सकती। उसका जवाब उस सच की गवाही था, जिसकी की दास्तान कई घरों के हालात की सच्ची बयानी है।

शोले फिल्म में एक सीन है, जिसमे जय (अभिताब बच्चन) वीरू (धरमेन्द्र) का रिश्ता लेकर बंसती (हेमा मालिनी) की मौसी(दीना पाठक) के पास जाता है और कहता है, मैं शादी का रिश्ता लाया हूं। मेरा दोस्त बसन्ती से बहुत प्यार करता है, तब मौसी पूछती है। क्या करता है, तुम्हारा दोस्त। बस थोड़ी शराब पीने की आदत है और नशे में जुआ खेलता तो थोड़ा बहुत कमाता है। वो उसमें हार जाता है, तो कभी कभी गाने बजाने वाली के कोठे पर चला जाता है। बाकी कुछ कमी नहीं मेरे दोस्त में, एक बार शादी हुई, बच्चे बच्ची, घरगृस्थी का बोझ पड़ेगा, तो ये आदत अपने आप छूट जाएगी। तो मैं ये रिश्ता पक्का समझ लूं। कई बार घर परिवार रिश्तेदार भी यही सोच कर शादी कर देते है कि एक बार शादी हुई, बेटा सुधर जाएगा और हर ऐब छिपाकर विवाह कर दिया जाता है। फिर मतभेद लड़ाई झगड़े, कलह की स्थिति कई परिवारो में उत्पन्न होती है।

समाज के रीति रिवाज़ो में कुरीति का समावेश भी मुख्य कारण है। मरण मौत में कई समाज में शराब और अफीम का चलन आज ग्रामीण इलाकों में देखने को मिलता है। जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन, शराब के नशे में आदमी गाली गलोच तक देने लग जाता है। होश हवास पर काबू नहीं रह पाता है। पीढ़ी दर पीढ़ी नशा करने के कुरीति ने भी इस कुसंस्कृति और कुसंस्कारो को बढ़ावा दिया। बाप, दादाओं को शराब पिता को देख घर के बच्चे भी धीरे धीरे पीना सीख जाते हैं। पता भी नहीं चलता, किसी बड़े शायर का शेर याद आ गया–

उम्रभर का चढ़ा हुआ दरिया उतर गया!
बेटे ने पी तो बाप का नशा उतर गया !!

बाप को बेटे के बिगड़ैल होने का पता चलता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत। बुरे की संगति बुराई सीखाएगी, अच्छे की संगति अच्छाई, सोहबत का असर होता है।

आज अर्थ प्रदान युग में हर आदमी रोज़ी रोटी की जुगाड़ में रहता है। काम की व्यवस्था माता– पिता को बच्चों की परवरिश के लिए समय नहीं दे पाने के लिए मजबूर कर देती है। एकल परिवार की वजह से बच्चों पर निगरानी रखना मुश्किल हो गया है। आज हर तरह के नशे ने समाज में अपनी जड़े फैला दी है। समाज की युवा पीढ़ी को खोखला करने के लिए ड्रग माफिया ने अपनी ज़ाल पूरी दुनिया में बिछा दिया है। पाश्चात्य संस्कृति ने युवा पीढ़ी को पैशन परस्त बना दिया है। सोसायटी में कई बुराइयां ऐसी है, उसे रूतबा समझा जाता है। शराब पीना, शादी ब्याह, पार्टियों में चलन है। खुशी का इजहार करने के लिए इसे शान के साथ पिया और पिलाया जाता है। गुमराह होती युवा पीढ़ी अंधकार की तरफ धकेल दी जा रही है। माता पिता, परिवार, उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और युवा जिस रास्ते पर जा रहे हैं, वहां सिर्फ़ गहरी खाई है। बेरोजगारी ने भी युवाओ को भटकने के लिए लाचार कर दिया।

तनाव, अवसाद आज सबसे बड़ी बीमारी है, जिसे डिप्रेशन का नाम दे दिया है। नकारात्मक माहौल से भी युवा नशे की तरफ अपने कदम बढ़ा देते हैं। अय्याशी का शौक और आनंद की तलाश ने ना जाने कितने लोगों को जिल्लत की ज़िन्दगी जीने के लिए मजबूर कर दिया है। समाज में हर युग में नशामुक्ति के प्रयास कई व्यक्तियों, संगठनों और सामाजिक स्तर पर किये जा रहे है, मगर परिणाम आशा अनुरूप नहीं आ रहे है। कुछ राज्यों में शराबबंदी सरकार की तरफ से लागू है, मगर चोरी छुपे वहां भी शराब उपलब्ध हो जाती है, पर नशामुक्त भारत की स्थापना के लिये हर वर्ग को आगे आना चाहिए,

आओ आज हम एक संकल्प लें कि हमारे नजदीक के लोग जो नशा करते हैं, उनको सुधारने की एक कोशिश करें। घर, परिवार, समाज, मित्र, जहां भी नशे के आदी लोग मिले, उन्हें येन केन प्रकारेण सुधारने के अपने स्तर पर प्रयास करने होंगे। ये भी एक बहुत बड़ा भलाई का कार्य है। आज मैं कोई व्यसन नहीं करता हूं, तो यह बात कहने की हिम्मत हो रही है, मुझ में ये ऐब होता तो शायद, मेरे विचार मुझे भी अच्छे नहीं लगते।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
कवि व साहित्यकार, काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

नशे में डूबता जीवन, मदिरापान

काछबली, मंडावर व रोजदा ग्राम पंचायतें हुई शराब मुक्त

शराबबंदी और शराबखोरी के बीच फंसी जनता के बीच राज्य सरकार भी इन दिनों बेहद परेशान है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद राजस्थान की जनता अब शराब नहीं चाह रही है। राज्य की आठ हजार पंचायतों में से दो हजार पंचायतों की जनता ने अपने यहां से शराब की दुकानें हटाने के लिए वोटिंग कराने के लिए सरकार को लिखित में दे दिया है। काछबली, मंडावर और रोजदा पंचायतों को सफलता भी मिली है। अकेले राजसमन्द की सात पंचायतें और प्रयासरत है। राजस्व की कमी के डर का हौव्वा खड़ा कर सरकार हर तरह के हथकण्डे अपना रही है। इन्हीं हथकण्डों के सहारे वोटिंग रूकवाने के प्रयास भी करती है, तो जनता कोर्ट के जरिए वोटिंग के नियम का पालन करवाने पर अड़ी है। गौरतलब है कि इससे इससे राजस्थान के 15 जिलों में शराब बिक्री में 10 से 28 फीसदी की कमी आई है। यह गिरावट निरंतर जारी है। इससे नाराज सरकार आबकारी अधिकारियों से गाड़ियां छिनकर नोटिस थमा रही है। राज्य सरकार के आबकारी विभाग को प्रतिवर्ष आठ हजार करोड़ की राजस्व कमाई होती है। जनता को झांसे में रखने के लिए सरकार दस करोड़ का खर्च 'शराब पीने के नुकसान बताने' में खर्च कर रही है।

शराब सेवन एक देशव्यापी समस्या है। देश की यह समस्या शराब पीना नहीं, वरन् शराबखोरी है। समाज और सरकार इसके प्रति गंभीर नहीं है। सम्पूर्ण शराबबंदी एक अव्यावहारिक कल्पना है। शराब निर्माताओं व सत्ता प्रतिष्ठान की सोची समझी साज़िश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अंधाधुंध प्रचार प्रसार कर शराबखोरी को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह भी सत्य है कि शराब और अपराध एक दूसरे के पूरक हैं। दुर्भाग्य से शराब की लत से सबसे ज्यादा कमज़ोर और गरीब तबके के लोग प्रभावित होते हैं। पूर्ण शराबबंदी के लिए कई राज्यों में प्रयास हो रहे हैं। खासकर महिलाएं इस क्षेत्र में ज्यादा सक्रिय हैं। शराबबंदी के बीच एक तरफ सत्यता तंत्र राजस्व के मोह में इस कदर जकड़ा हुआ है कि वह शराबबंदी और सामाजिक कल्याण के प्रति संवेदना शून्य बना हुआ है।

उत्पत्ति मद्य यानि शराब करता है ? इसकी उत्पत्ति के बारे में कई किवदंतियां प्रचलित है। जैसे कि एक बार अकाल के समय में एक हंस जंगल के एक पेड़ पर आकर रहने लगा। उसी पेड़ के नीचे एक शेर रहता था। दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। हंस शेर को सदैव अच्छी सलाह देता था। शेर उस रास्ते से गुजरते राहगीरों को मारकर अपना पेट भरता था।

एक बार एक ब्राह्मण उसी रास्ते से चला आ रहा था। हंस ने ब्राह्मण को आते देख शेर से कहा, देखो मित्र– एक ब्राह्मण चला आ रहा है। उसे मत मारना क्योंकि तुम क्षत्रिय हो। क्षत्रिय कभी भी कमज़ोर, वृद्ध और ब्राह्मण का वध नहीं करता। तुम उसके जजमान हो। अत: उसे अपना धन देकर विदा करो। शेर ने ऐसा ही किया।

कुछ वर्ष रहकर हंस वहां से चला गया। उसकी जगह एक कौआ आकर रहने लगा। कौवे की सोहबत से शेर में दुर्गुण आ गए। वहीं ब्राह्मण फिर उसी रास्ते से गुजरने लगा। कौआ बोला, देखो कोई ब्राह्मण आ रहा है। उसे मारकर अपना भोजन बनाओ। जजमान बने तो हम भूखे मर जाएंगे। ब्राह्मण ने आश्चर्य से पेड़ पर देखा तो कौआ बोला।

वो हंसा तो समदो गया, कांग्रेस गया प्रधान।
थे बामण मारिया गया, सिंह कुछ जान जजमान।।

शेर ने ब्राह्मण मारकर डाला। दोनों ने मिलकर मांस खाया। कुछ समय बाद एक शुद्र उसी रास्ते पर गधे पर सवार होकर आया। शेर ने उन्हें भी मार डाला। देवयोग से जहां तीनों का खून गिरा वहां महुआ का पेड़ उग आया। उसी से शराब की उत्पत्ति हुई। जहां बुरी संगत है, वहां हिंसा है। जहां हिंसा है, वहां शराब है। शुद्रता, दरिद्रता, पशुता का पालन शराब से ही होता है।

शराबबंदी के लिए नुक्कड़ सभा

मंडावर में शराबबंदी के लिए मतदान की तारीख घोषित होने के साथ ही इस तरह नुक्कड़ सभाएं ली सरपंच प्यारी देवी रावत ने।

शराब एक सोच : शराब के प्रचलन में कुछ सोच भी उत्तरदायी है। जैसे खुशी, दु:ख या गमी। जीवन में असफलता, धनिक अनुगामी, गरीबी, बीमारी आदि आदि। निर्विवाद सत्य तो यह है कि शराब से इन कारणों का कोई ताल्लुकात नहीं है। यह सिर्फ शराबियों के तर्क है। मादक द्रव्यों की भूख कितनी जानलेवा है। यह हम हमारे आसपास होने वाली घटना-दुर्घटनाओं को देखकर समझ सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि जो भी नशे का शिकार हुआ, उसने सब कुछ गंवाया ही है। जहांगीर ने सारी सल्तनत नूरजहां के हाथों में रख दी थी। जहांगीर कहता था-

एक सेर कबाब मुझको, आधा सेर शराब।
सारी सल्तनत नूरजहां की, खूब हो या हो खराब।।

श्रेष्ठ मानव जीवन को सिर्फ एक शराब बर्बाद कर रही है। इस पर एक अन्य शायर ने कहा कि-

शराब पीकर बनता है, शर बशर।
यक तो शर बशर में, दोयम शराब में।।

शराब का शाब्दिक अर्थ होता है शऱआर। शर यानी शरारत व आब यानी पानी। मतलब शरारत का पानी। वैध या अवैध शराब धंधे में लिप्त महिला- पुरूषों का समाज और मानवता के प्रति यह कार्य सबसे घृणित कार्य है। युवा पीढ़ी अगर जागरूक होकर महिलाओं के शराबबंदी आन्दोलनों में साथ दे, तो यह बहुत बड़ी ताकत बन सकती है। वैसे तो-

हमारे समाज के इंसान है जहीन बहुत।
जमीर बेच के शोहरत खरीद लेते हैं।।

शराब के दोष : शराब सेवन से उत्पन्न बुराई व हानि पर पूरे समाज को गंभीरता से चिंतन करना होगा। महान जैनाचार्य हरिभद्र ने शराब के सोलह दोष बताएं है, जो आज भी सामयिक है। यथा (1) बैरूप्य (2) व्याधि (3) पारिवारिक जनों से तिरस्कार (4) कार्य समय का अतिपात (5) विद्वेष (6) ज्ञान का नाश (7) समृति का नाश (8) बुद्धि का नाश (9) सज्जनों से अलगाव (10) कठोरता, (11) नीचजनों की सेवाए (12) कुल गौरव का नाश (13) बल का लोप (14) धर्म का नाश (15) कामशक्ति का नाश (16) अर्थ नाश।

शराब का मायाजाल :

हमारे देश में सन् 1995 ई. से 2015 ई. के दौरान शराब का उत्पादन 230 गुणा बढ़ा है। यदि भट्टियों में पकती अवैध शराब और दवाओं के नाम पर बन रही मदिरा भी इसमें जोड़ दें तो इस समस्या का अंदाजा कुछ हद तक लगाया जा सकता है। शराब का व्यसन फैलने का मूल कारण समाज का पाश्चत्य नजरिया है। यांत्रिक युग में व्यक्तिगत घुटन, पीड़ा, संत्रास और अन्तर्द्वन्द्व भी बहुत बड़े कारण हैं। बढ़ते उपभोक्तावाद से समाज अछूता नहीं है। रोजगार की कमी व जमीनों का अभाव युवाओं में बेबसी बढ़ा रहा है। समाज का ढ़ांचा कमजोर पड़ता रहा है। संबंधों में बिखराव, अनैतिक संबंध, बलात्कार और नैतिकता के पतन इसके प्रतिरूप बन गए हैं। ऐसे दौर में लोगों को राहत पाने का सबसे सरल तरीका शराब में नजर आता है। कमजोर लोगों व कमजोर तबके को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। इसी कीमत पर सरकार का राजस्व जिन्दा है।

गोविन्द सिंह चौहान
गांव भागावड़, भीम
जिला राजसमन्द
मो. 9783207045

भामाशाह की मदद से गांवों के परिदृश्य में विकास से जुड़ते नए आयाम

पहल की जरूरत, फिर समग्र विकास में स्वतः बढ़ती जाएगी जनसहभागिता

भारत सिर्फ शहरों में नहीं, बल्कि लाखों गांवों में बसा है। किसी भी गांव के विकसित होने के प्रतिमान उस गांव की ग्राम पंचायत के साथ ही ग्रामीणों की मानसिकता पर निर्भर करते हैं। भारत देश की अधिकतर जनता गांवों में निवास करती है, जहां पंचायतीराज व्यवस्था को विकास कार्यों का जिम्मा सौंपा गया है, लेकिन सरकारी प्रयासों के साथ ही सोने पे सुहागा वाली कहावत सार्थक सिद्ध हो जाती है, जब गाव के जागरूक व्यक्ति भी विकास व उन्नति में व्यक्तिगत रूप से भामाशाह के रूप में सहभागी बनते हैं।

दान का अर्थ बोना है, यह एक ऐसा बीज है, जो समाज में कल्याण व उन्नति की फसल बो सकता है, बशर्ते दान के पीछे छिपी भावना उत्कृष्ठ हो, जो समाज को विकसित पैमाने की ओर ले जाए वर्तमान में विद्यालय स्तर पर भामाशाहों की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। बात करें विद्यालय स्तर पर सहयोग की तो कई भामाशाह की बदौलत गांव के कई स्कूलों में बेहतर सुविधाएं मिल रही है, जिनमें विद्यार्थियों को कॉपियां, स्वेटर वितरण के अलावा विद्यालयों में दरिया, फर्नीचर आदि उपलब्ध कराने, सरकारी स्कूलो की दशा सुधारने में एवं गांवों के विकास में भामाशाहों का योगदान उल्लेखनीय है। बात करें मेवाड़ की तो महाराणा प्रताप की सहायता करने वाले दानवीर भामाशाह जिन्होंने अपरिग्रह को जीवन का मूल मंत्र मान कर संग्रहण की प्रवर्ती से दूर रहने की चेतना जगाई एवं राष्ट्रप्रेम के वशीभूत मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी सारी सम्पति महाराणा प्रताप को दान कर दी, ताकि मेवाड़ का आत्म सम्मान बना रहे। लोकहित के लिए अपना सब कुछ दान कर देने वाले इस गौरव पुरुष की प्रेरणा को हमेशा के लिए संजोए रखने के लिए भामाशाह सम्मान भी दिया जाता है। उनकी इसी गौरवशाली परम्परा के अस्तित्व को आज भी कई दानदाताओं ने बनाए रखा है।

हम बात करें राजस्थान के राजसमन्द जिले के शिक्षा व खेल से जुड़े विकास कार्यों में खेलो की, तो श्री बालकृष्ण स्टेडियम इस जिले का एकमात्र स्टेडियम रहा है। राजसमन्द जिले की प्रत्येक पंचायत में कोई एक और जगह जहां खेल मैदान उपलब्ध हो। इसी क्रम में गत वर्ष पसून्द पंचायत के अधीन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का में जिला स्तर एथलेटिक प्रतियोगिता (सरकारी विद्यालयों) 19 वर्ष की आयु तक के विद्यार्थियों के लिए खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए चयन किया गया। सफलतापूर्वक आयोजन करने की प्रथम आवश्यकता उचित, अनुकूलित खेल का मैदान होता है। जिला प्रशासन, शिक्षा विभाग के अधिकारी व ग्राम पंचायत ने मनोयोग से विद्यालय के विशाल भूमि को खेल मैदान में परिवर्तित किया, जो काबिले तारीफ है, परन्तु पूरे जिले की टीमों को व्यवस्थित रूप से ठहराना, उनके खाने- पीने की व्यवस्था करना एक चुनौती भरा कार्य था। क्योंकि खेल बजट तो ऊंट के मुह में जीरे के समान रहा। गांव के जागरूक लोगों के मद्देनजर इस कार्य को बखूबी अंजाम दिया गया। कई भामाशाहों व जनसेवकों के सहयोग से इस पूरी प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। विद्यालय के रंग रोगन से लेकर टीमों के ठहरने का बंदोबस्त, चाय- नास्ता व खाने का बंदोबस्त, पुरस्कार आदि की व्यवस्था भामशाहों व जागरूक ग्रामीणों ने खूब संभाली।

आखिर गांव के आत्मसम्मान व मेजबानी के जज्बे की जीत हुई। इस ग्राम पंचायत में शायद राजसमन्द जिले के दूसरे खेल के मैदान का निर्माण हुआ। इस खेल प्रतियोगिता का समापन विद्यालय को नया स्वरुप प्रदान कर गया। एक नई ऊर्जा, एक नए संकल्प के साथ कि इस मैदान से कई खेल प्रतिभाओं का भविष्य सुनहरा हो सके। साथ ही इस मैदान का उचित रखरखाव कर इसे एक और बेहतरीन स्टेडियम के रूप में विकसित किया जा सके। इसके लिए आवश्यकता है सार्थक प्रयासों की।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत में किसी भी राष्ट्र की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, तो फिर राष्ट्र की प्रतिष्ठा से जुड़े मुद्दों पर ध्यान देना व गंभीरतापूर्वक विचार करना भी अति आवश्यक हो जाता है। क्रिकेट, बेडमिन्टन, टेनिस जैसे खेलों से सफलता प्राप्त करने के अलावा अन्य खेलों जैसे कुश्ती, मुक्केबाजी, निशानेबाजी से जुड़े प्रतिभावान खिलाडियों ने विपरीत परिस्थितियों में भी पदक हासिल कर भारत की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाए हैं। इनमें से अधिकतर छोटे छोटे गांवों से भी कई खिलाडी हैं, जिन्होंने अपने भारत देश को कई पदक दिलाएं हैं। हमारे देश मे ऊर्जावान खिलाडियों की कमी नहीं, बस आवश्यकता है सही अवसर व मार्गदर्शन की और साथ ही बेहतर सुविधाओं के साथ अच्छे प्रशिक्षण की।

खेल जो हमारे शारीरिक व मानसिक पोषण का विकास करते हुए अनुशासन, धैर्य, सहयोग, एकता, निष्ठा एवं सहिष्णुता जैसे अनमोल गुणों से परिचय कराते हैं एवं स्वस्थ प्रतियोगिता से मिली हार- जीत जीवन में आने वाली समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करना सिखाती हैं। खेलों के महत्त्व का गुणगान करते हुए यूं तो विद्यालयों में शिक्षा के साथ खेलों को प्राथमिक स्तर से ही जोड़ा गया है, परन्तु खेल सुविधाओं, खेल मैदानों व उचित प्रशिक्षक व देख रेख के लिए खेल बजट का अभाव कहीं न कहीं खिलाडियों के मनोबल को हतोत्साहित करती है, परन्तु यदि खेल और शिक्षा के एकीकरण के साथ ही प्रारंभिक स्तर पर खेल प्रतिभाओं को पहचान कर उसे निखारना, उसे उच्च स्तर का शिक्षण प्रदान करना, स्कूली स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करने के प्रयत्नों में यदि भामाशाह आगे भी इसी तरह उत्कृष्ठ योगदान देते रहे, तो यही खेल का मैदान इस गांव में बेहतरीन खिलाडियों को पनपने का अवसर प्रदान करेगा और अन्य गांवों को एक नई रोशनी भी दिखाएगा। सरकारी नौकरियों में खेल कोटे में भर्ती भी कहीं न कहीं युवाओं को खेलों की और आकर्षित करती हैं, तो ऐसे में सरकारी प्रयासों के साथ ही भामाशाहों व जनसेवकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है, ताकि राजसमन्द जिले से भी बेहतरीन खिलाड़ी निकले, अपने बेहतरीन प्रदर्शन के साथ देश के लिए खेलें और अपना नाम सुनहरे अक्षरों में लिख सके।

और फिर शिक्षा के क्षेत्र में खेल भी बेहद जरुरी है, जितनी कि पढ़ाई, पढाई के लिए हमेशा स्वस्थ दिमाग चाहिए और कहा गया है कि स्वस्थ मस्तिस्क, स्वस्थ शरीर में ही निवास करता है, तो ऐसे में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भी खेल अनिवार्य है। राजसमन्द जिले से भी बेहतरीन खिलाड़ी निकले और भारत देश के लिए खेलें। बेहतरीन प्रदर्शन के साथ अपना नाम सुनहरे अक्षरों में लिख सके।

राज्य सरकार की विशेष योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रो में खेलो को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से प्रदेशभर में राज्य क्रीड़ा परिषद् की ओर से खेलों का सामान ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक शिक्षा के सरकारी स्कूलों में उपलब्ध कराया गया। खिलाड़ी अपनी प्रतिभा को बेहतरीन रूप से तराश सके एवं खेल मैदान विकसित हो सके। इसी उद्देश्य को पूरा करने के प्रयास किये जा रहे हैं, परन्तु इन्हीं प्रयासों के साथ यदि जन सेवकों व जागरूक लोगों का सहयोग भी हो जाए, तो निर्धारित लक्ष्य सुगमता से प्राप्त हो सकते हैं। शिक्षा के साथ सामाजिक विकास कार्यों में भी तेजी लाई जा सकती है। समय समय पर सामाजिक जागरूकता के लिए शिविर लगाए जाए, जिनमें स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जानकारी, सामाजिक कुरीतियों के निवारण के प्रयास किए जाए। इसके अलावा गरीब, मध्यम वर्ग वाले तबको को कम खर्चे पर सुविधाएं दिलवाने का प्रयत्न किया जाए। इसी क्रम में पसून्द ग्राम पंचायत द्वारा निर्मित सामुदायिक भवन का निर्माण आज इसी मकसद को पूरा करता नजर आता है। यहां इस भवन का जिक्र करना इसलिए जरुरी है। क्योंकि इसी गांव के आशिया परिवार द्वारा इस भवन के निर्माण के लिए ग्राम पंचायत को जमीन दान की गई एवं निर्माण कार्य में भी योगदान किया गया। आज इसी सामुदायिक भवन में गांव के लोग नाम मात्र के खर्चे में अपने सामाजिक कार्यक्रमों व शादी ब्याह का कार्य पूरी सुविधा के साथ निपटाते हैं। यक़ीनन इसमें इस परिवार के दान के पीछे सामाजिक कर्तव्य की भावना साफ़ दिखाई देती है। दान इस प्रकार का हो जो समाज के अंग लगे।

भामाशाहों द्वारा दान के पीछे श्रद्धा, सद्भावना, सदुपयोग की व्रती होनी चाहिए। अतीत में बहुत से भामाशाहों ने कई ऐसे उल्लेखनीय कार्य किए है, कईयो के तो नाम भी हम नहीं जानते जो अपने अपने क्षेत्रों में कार्य कर रहे होंगे, जिनके द्वारा बोए दान रूपी बीजों की फसल विकसित रूप में लहलहा रही होगी और भविष्य में इन कार्यों में तेजी दिखाई दें, इसी तरह एक दूसरे से प्रेरित होकर यदि कड़ी से कड़ी जुडती चले, तो राजसमन्द जिले के सभी गावों कों विकास के पथ की ओर अग्रेसित करें। यही हम सब की मंगल कामना है।

नजमा खातून
साहित्यकार एवं शिक्षाविद्

गौकुलानन्द ने जगाई थी शिक्षा की अलख

मेवाड़ की धरती के नाथद्वारा, कांकरोली बृजवासियों के लिए गोकुल- मथुरा और बृजभूमि की तरह है। बृज संस्कृति की झलक पुष्टि मार्ग परम्परा और ठाकुरजी के मंदिर के साथ साथ यहां के ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक वातावरण ने अन्य प्रान्तों से आए लोगों को स्थायीवास करने के लिए प्रेरित किया है।

सन् 1935 का कांकरोली, राजसमन्द झील की उत्ताल तरंगों से खेलती अरावली से आकर झील की अनन्त गहराइयों में समा जाने को आकुल हवा की अठखेलियों को ब्रज- वृन्दावन से आए 24 वर्षीय कोमल कान्त काव्य मनीषा के प्रत्युष से आलोकित युवक ने महसूस किया। श्री द्वारिकाधीश मंदिर के नंगारखाने की शहनाइयों के बीच शयन के दर्शन के पवित्र वातावरण ने गोकुलानन्द तैलंग नामक इस युवक ने तय कर लिया कि वृन्दावन से कांकरोली के धार्मिक- प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य बसा जाए। वृन्दावन के भागवत व्यासपीठ से जुड़े भागवताचार्य पंडित मधुसूदन भट्ट के पुत्र के रूप में जन्मे गोकुलानन्द का बाल्यकाल संस्कृत व अन्यान्य भाषाओं के उन विद्वानों के सानिध्य में गुजरा जो माध्वगौड़ेश्वर परम्पराओं से सम्बद्ध थे। घर में मदन मोहन प्रभु की विस्तृत सेवा रही, जिससे अपने पिता एक अग्रज और दो छोटे भाइयों के साथ आप सम्बद्ध रहे, मगर बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि होने से आधुनिक शिक्षा के प्रकाश से स्नात होने की आपकी ललक सागर (मध्यप्रदेश), जहां से हाई स्कूल की स्कूली शिक्षा लेने के बाद सन् 1934 में सागर विश्वविद्यालय से क्रमश: बीए (ऑनर्स अंग्रेजी व संस्कृत साहित्य) एवं एमए (हिन्दी साहित्य) सहित साहित्य रत्न की उपाधियां प्राप्त की।

20वीं शताब्दी के तृतीय दशक में उक्त उपाधियों के दम पर उच्च सरकारी नौकरियां पाना अत्यंत सरल था, किन्तु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में सरकारी नौकरियों के माध्यम से अंग्रेजियत की गुलामी न करने का जज्बा इतना प्रबल था कि विण् प्रवक्ता की नौकरी ठुकरा कर गोकुलानन्द ने तरूण युवक संगठन के माध्यम से महात्मा गांधी के नेतृत्व में तब संचालित हो रहे आजादी के आन्दोलन में सहभागिता की। विजय विश्व तिरंगा प्यारा झण्डा ऊँचा रहे हमारा... के निनाद के साथ म्युनिसिपल हाई स्कूल सागर में तिरंगा ध्वज फहराकर गिरफ्तारियां दी। मन से साहित्यक संवेदनाओं से सम्पृत श्री तैलंग ने अपना पहला काव्य सृजन करते हुए राष्ट्र भारती व मेरे गीत काव्य कृतियां लिखी, जिन्हें मध्यप्रदेश के विद्वत पत्रकार मण्डल द्वारा तब पुरस्कृत किया गया था। अपने युवा जीवन में यायावरी प्रकृति होने से सागर से ऊबकर पुन: वृन्दावन में आकर भागवत् एवं गौड़ीय परम्परा के जीव गोस्वामी व रूप गोस्वामी पर विमर्श लेखन किया। यही निवास करते हुए पुष्टि सम्प्रदाय के पंचम पीठाधीश्वर घनश्याम लाल महाराज के सम्पर्क में आने पर आपकी साहित्य ऊर्जा से प्रसन्न होकर महाराज ने कामबन पीठ की साहित्यक परम्परा के संवर्द्धन का दायित्व आपको सौंप दिया।

यह एक सहज संयोग ही रहा कि एक जातीय विवाह प्रस्ताव में गोकुलानन्द का कांकरोली आगमन हुआ और स्वयं तृतीय पीठाधीश्वर गोस्वामी ब्रजभूषणलाल महाराज ने अपने व लघु भ्राता गोस्वामी विट्ठलनाथ महाराज के परिवार के बालक -बालिकाओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए आपको नियुक्त कर दिया। साथ ही विद्या विभाग के विविध साहित्य, पुष्टि सम्प्रदाय एवं आन्ध्रस्थ तैलंग परम्पराओं की शोध, समीक्षा, सर्वे एवं मौलिक लेखन का दायित्व सौंपा। वर्तमान पीठाधीश ब्रजेश कुमार सहित सभी गोस्वामी बालकों को विद्यालयी व महाविद्यालय शिक्षा के शिक्षण का गुरुतर भार वहन करते हुए तब से मृत्यु पर्यन्त गोकुलानन्दजी ने कांकरोली के आचार्य परिवार के अभिन्न अगं रूप में कांकरोली और बड़ौदा प्रवास करते हुए शिक्षण एवं महाराज के सचिव रूप में कार्य करते हुए पुष्टिमार्गीय वाड्यमय व हिन्दी साहित्य के अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि में ब्रजभूमि से जुड़े होने के कारण उन्होंने ब्रजभाषा में भक्ति, भावना सहित अन्याय विविध सामाजिक सांस्कृतिक विषयों पर काव्य, निबंध, हास्य, व्यंग्य, शृंगार, भक्ति रस सहित समस्त रसों पर गद्य पद्य दोनों ही विद्याओं पर कलम चलाई। प्रमाण स्वरूप प्रेम गीत, रस निर्झर, गीत गौरी, राधा गुणगान, रायसागर, गीत गोविन्द व भ्रमण गीत ग्रन्थों को रेखांकित किया जा सकता है। श्री तैलंग खड़ी बोली हिन्दी के लेखन कार्य से भी सम्बद्ध रहे और इस दिशा में हिन्दी गज़लों के सुमधुर गीतकार कहे जा सकते हैं। झरोखा, पलक, पलाश, बम्बई स्मृतियों के दंश, कांकरवल्ली बैठक मंदिर के काव्यमय संस्मरण इस दिशा में उनकी उल्लेखित रचनाएं है। वल्लभाचार्य की वंश परम्परा सहित दक्षिण भारत के तैलंग वंश के दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक आगमन, पुष्टि सम्प्रदाय की स्थापना आदि विषयों पर गोस्वामी ब्रजभूषण लाल महाराज और संस्कृत वल्लव संप्रदाय के विद्वान कंठमणी शास्त्री के शोधग्रन्थ विद्या विभाग कांकरोली द्वारा प्रकाशित हुआ। वह पुष्टिमार्ग के प्रमाणिक साक्ष्य के रूप में आज भी प्रतिष्ठित है। हवेली संगीत पर आधारित 'संगीत अष्टछाप' ग्रन्थ के जहां आप प्रणेता रहे, वहीं हिन्दी साहित्य के आधिकारिक अष्टछाप साहित्य के आठ ग्रन्थों का प्रकाशन भी आपने ब्रजभूषणलाल महाराज के साथ किया।

सरल और शान्त स्वभाव के धनी उनकी मित्रता देश के ख्यातनाम साहित्यकार, कवियों से रही। आचार्य चतुर सेन, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामदरश मिश्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, काका हाथरसी, हनुमान प्रसाद पोद्दार, चिम्मनलाल गोस्वामी एवं अनेक विश्वविद्यालय विद्वानों से पत्र व्यवहार और संवाद करते रहे।

राजसमन्द द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् एवं नगर के साहित्यकारों से वे सदा भाव व सृजन के धरातल से जुड़े रहे। परिषद की गोष्ठियां कभी मंदिर, कांकरोली, बड़ौदा की विद्वत सभाओं सहित घनिष्ठ मित्र नारायणलाल, तहसीलदार सा. राजकिशन मथुर, पी. पी. तैलंग, छन्नूलाल जी, धनीराम जी आदि के साथ कभी सिंचाई गार्डन, तो कभी ब्रजनिकुंज और कभी विठ्ठल विलास बाग के मध्य स्वान्त सुखाय, रचनाएं सुनने व सुनाने का आनंद लेते रहे।

कल्याण संगीत, श्री कृष्ण संदेश आदि पत्रिकाओं के आप स्थायी लेखक रहे हैं और बृजभाषा साहित्य सेवाओं के लिए राजस्थान बृजभाषा एकेडमी द्वारा भी सम्मानित हुए। निकुंज उपनाम आप अपने नाम के साथ लिखा करते थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा देवी उस जमाने की पहली मैट्रिक पास नगर में विदुषी महिला थी। उस जमाने में नगरपालिका बोर्ड राजसमंद में भवानीशंकर दाधीच चेयरमैन के कार्यकाल में पहली महिला पार्षद बनने का गौरव प्राप्त किया। उस जमाने में कांकरोली में ये शिक्षित परिवार था। उनकी चारों पुत्रियों को उच्च शिक्षा प्रदान करवाई। उस समय कांकरोली ग्राम में दकियानूसी विचारधारा के चलते लड़कियों को स्कूल पढ़ाई करने नहीं भेजा जाता था। फिर भी साक्षरता के शिविर मंदिर और खिड़क में चलाए।

लड़कियों को पढ़ाने के लिए जनजागरण अभियान चलाया। उनकी स्वाभाविक मृत्यु 16 अगस्त 1990 में कांकरोली में अपने निवास पर हुई। इनकी चार पुत्रियां- सुमन, मधुलिका, कौमुदनी, अर्चना और दो पुत्र डॉ. राकेश तैलंग और श्री पद्ममेश तैलंग तथा पौत्र-पौत्रियों, पत्नी सहित भरा पुरा परिवार छोड़ देवलोक गमन कर गए। समय की रेत पर गोकुलानन्द जी तैलंग और उनके ही समान इस सांस्कृतिक शहर के अनेक साहित्यकारों, मनीषियों के पदचिह्न हो सकता है। अपने निशान धुमिल कर दें, लेकिन मसिजीवी, लेखकों, पत्रकारों, सुधी साहित्यकारजन, संस्कृतिविदों द्वारा जब उन्हें रेखांकित किया जाएगा, तब तब उन दिवंगत आत्माओं के लिए ये पक्तियां अवश्य दोहराई जाएगी-

दिल का सुना साज, तराना ढूँढेगा।
मुझको मेरे बाद, जमाना ढूँढेगा।।

प्रस्तुति :
सूर्य प्रकाश दीक्षित
कवि एवं साहित्यकार

तीखी मिर्ची

स्वागत करो नेताजी आए हैं

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com (94142-39648)

आजकल हर गली मोहल्ले में चुने से लाइनें खिंची हुई मिलती है। कचरे वाला भी समय पर आ रहा है, जो अक्सर गोतमारी करता था। हर सड़क साफ सुथरी दिखाई देने का प्रयास सब तरफ हो रहा है। जिन सड़कों पर नल टेलीफोन लाइन वालों ने खड्डे कर दिए थे। उन पर भी तुरन्त डामर डाल कर खड्डे को छिपाने के प्रयास तीव्र गति से किए जा रहे हैं। प्रत्येक गांव में होटलों पर पान, गुटके थुंक कर ठालागर्दी करने वाले बेरोजगारों के चेहरे पर भी इन दिनों चमक आ गई। वे साफ सुथरे सफेद कुर्ते पजामें में बड़े नेताओं के साथ गली गली में घुमकर गौरव यात्रा में लोगों की संख्या बढ़ाने में सहयोगी बन गए हैं। बड़े- बड़े मंत्री और विभिन्न पदों के नेताजी कई जगह पर सभाएं कर यात्रा में आने का निमन्त्रण दे रहे हैं। कहीं गांव तो ऐसे है, जहां पिछले चुनाव में नेताजी आए थे और वापस अब देखे जा रहे हैं, तो सब कहते हैं स्वागत करो नेताजी आ रहे हैं।

कुछ रूठे हुए नेता- कार्यकर्ताओं को मनाया जा रहा है। आजकल सरकारी दफ्तर भी समय पर खुल रहे हैं और जनता के कार्य भी हो रहे हैं। आगे से सख्त आदेश है कि चुनाव की इस पहली सभा में अधिक से अधिक भीड़ होनी चाहिए।

पूरे शहर में वर्षों से घुम रहे मवेशियों को हटाया जारहा है, क्योंकि बैल कहीं किसी मेहमान के सिंग न मार दें, वरना शहरवासियों को तो इसकी आदत हो गई है और शहरवासियों के लिए तो दो दिन बाद इन पशुओं को पुन: इन सड़कों को सुपुर्द कर दिया जाएगा।

बाहर से आने वाले मेहमानों को राजसमंद बहुत ही सुन्दर लगे। इसका पूरा प्रयास किया जा रहा है। क्या सड़कों की मरम्मत के लिए ऐसे आयोजन का इन्तजार करना चाहिए। जिस तत्परता से सरकारी महकमे एवं जनप्रतिनिधि इन दिनों शहर को सजाने में लगे है, वही उत्साह और जिम्मेदारी आम दिनों में क्यों नहीं रहती है ?

वर्तमान में सस्ते व क्षणिक सौन्दर्य के कार्यों के प्रति राजनैतिक दिलचस्पी बहुत रहती है, मगर आमजन के जीवन से जुड़े आवश्यक कार्यों को अनसुना कर दिया जाता है।

राजसमंद झील भरने वाली खारी फीडर की चौड़ाई बढ़ाने का कार्य, बनास नदी पर बेहतर पुल बनाने का कार्य जो राजसमंद से लेकर चित्तौड़गढ़ तक के लोगों की जरूरत है। पुल के अभाव में अक्सर कई लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसी तरह राजसमंद झील के रिंग रोड बनाने से पर्यटन एवं रोजगार को बढ़ावा मिल सकता है, लेकिन ऐसे कार्यों के लिए सरकार के पास बजट की कमी हो जाती है। वहीं इस तरह चुनाव जीताऊ आयोजनों में लाखों रुपए पानी की तरह बहाए जाते हैं। कई देशों में चुनाव प्रचार के दौरान न्यूनतम खर्च किया जाता है। हम चाहे तो इन देशों से प्रेरणा लेकर इसी चुनावी बजट को जनहित के कार्यों पर खर्च करें, तब जनता दिल से कहेगी, स्वागत करो नेताजी आए हैं।

डिजिटल साक्षर बनी पंचायत

मंडावर में शराबबंदी के दौरान पहुंचे रावत समाज के रासासिंह।

मंडावर में शराबबंदी के लिए भीम में धरदने पर बैठी महिलाएं।

शराबबंदी के लिए मंडावर में यूं नुक्कड़ नाटकों से किया जागरुक

सघन पौधरोपण व हरितिमा से आच्छादित ग्राम पंचायत भवन

शराबबंदी के लिए महिलाओं की बैठक लेती सरपंच

महिला सैनिक का सम्मान करते सरपंच व ग्रामवासी।

शराबबंदी मतदान तिथि तय करने के लिए भीम पहुंचे ग्रामवासी।

शराबबंदी के दौरान विधायक हरिसिंह रावत से चर्चा।

शराबबंदी के संघर्ष की कहानी

सरकारी 'रोड़े' भी नहीं हरा सके जीत के जज्बे को

मंडावर शराबबंदी कराने वाली प्रदेश की तीसरी और राजसमंद की दूसरी पंचायत बनी

जीत की खुशी

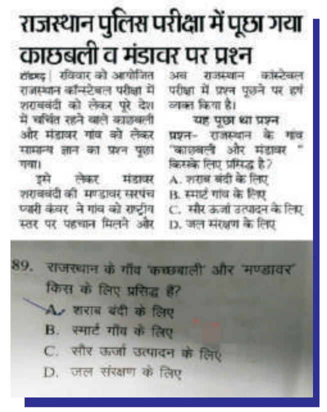
राजस्थान पुलिस परीक्षा में पूछा गया काछबली व मंडावर पर प्रश्न

89. राजस्थान के गांव 'काछबली' और 'मंडावर' किस के लिए प्रसिद्ध है?
A. शराब बंदी के लिए
B. स्मार्ट गांव के लिए
C. सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए
D. जल संरक्षण के लिए

मण्डावर बनी राजस्व विवाद मुक्त पंचायत

सरपंच प्यारी रावत को 'आपणो ग्रामीण राजस्थान सम्मान' से नवाजा

महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आकर समाज का नाम रोशन करें : सरपंच रावत

'जीत' पर मंडावर में जश्न

शराबबंदी का मामला जोधपुर हाईकोर्ट पहुंचा

मंडावर सरपंच प्यारी कंवर रावत के राजस्थान व केन्द्रीय मंत्रियों के साथ बिताए पल

राज्य महिला आयोग अध्यक्ष सुमन शर्मा के साथ।

उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी के साथ।

केन्द्रीय मंत्री उमा भारती के साथ।

यूपी कैबिनेट मंत्री स्वातिसिंह के साथ।

राज्य महिला आयोग द्वारा मंडावर सरपंच का सम्मान।

पतंजलि योग पीठ द्वारा सरपंच का सम्मान करते हुए।

रावत महासभा की ओर से मंडावर सरपंच का सम्मान करते हुए।

रावत परिषद द्वारा सरपंच प्यारीदेवी को सम्मानित करते हुए।

मध्याह्न पोषाहार : मन्तव्य और गन्तव्य

दक्षिणी राजस्थान का दूरस्थ वनांचल बागड़ क्षेत्र आदिवासी क्षेत्र में मध्याह्न पोषाहार कार्यक्रम की उपादेयता व भारतीय सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि में इसकी प्रासंगिकता पर राज्य स्तरीय किसी शोध, सर्वे के सन्दर्भ में गांव के प्राथमिक विद्यालय में पहुंचने का रोमांच था। उस दिन मन में मध्यान्तर की घंटी के साथ अपने अपने घर से लाए खाली डिब्बों को लेकर पंक्तिबद्ध खड़े बच्चे। तब के शुरुआती दौर में घूघरी का वितरण हुआ करता था।

पंक्तिबद्ध आगे बढ़ता वह छोटा सा, कुपोषित सा, जिज्ञासा भरी निस्तेद आंखों से वितरकों के घूघरी से भरे विशाल तपेले को हसरत से निहारता बच्चा मास्टर सा. के सामने आ खड़ा हुआ। छोटा सा एल्युमिनियम का डिब्बा घूघरी से भर जाने के बाद भी जब अबोध बालक आगे नहीं बढ़ा, ठिठक रहा तो शायद गुरुजी उसकी भोली मंशा को समझ गए व बोले– 'और चाहिए ?' गुरुजी के प्रश्न पर बच्चे ने हामी में सिर हिला अखबार का खाली कागज थमा दिया। उतनी ही और घूघरी पुड़िया में बांध कर बच्चा खुश खुश दौड़ गया, लेकिन बालक ने अतिरिक्त घूघरी और क्यों चाही। मेरी इस जिज्ञासा का समाधान गुरुजी से पाने के बाद मन व्याकुल हो गया, विचलित सा हो गया– 'इस बच्चे के बाप नहीं है, तीन भाई– बहन है। एक स्वयं, एक बहन, एक छोटा भाई'।

मां मजदूरी पर जाती है। दो समय की रोटी का इन्तजाम भी दुभर है। घर में बारी बारी से खाना खाने की व्यवस्था है। बहिन घर में बनी मां की एक रोटी में हिस्सा बंटाएगी। स्कूल की घूघरी आज बड़ा भाई खाएगा। क्योंकि मां को मालूम है कि इस बच्चे के हिस्से की घूघरी से दो भाईयों के पेट की आग पूरी तरह नहीं बुझ पाएगी। वह पूरी घूघरी खा लेगा, तो कल छोटे भाई का पेट भी पूरा भर सकेगा।

तो यह जानने के बाद भी आज घर में छोटे भाई के खाने का 'बारा' (टर्न) नहीं है– बड़ा भाई का भी तो कर्तव्य बनता है कि वह वैकल्पिक प्रयास करें, वरना उसे रातभर नींद नहीं आएगी। एक्स्ट्रा घूघरी पाकर छोटे भाई व बहिन के खाली और अधूरे पेट की क्षुधा को शांत करने की उसके चेहरे की खुशी का अनुभव कर बस मेरी आंखों से गंगा–यमुना ही नहीं बही होगी।

इन पंक्तियों के लेखक मुझ और मुझ जैसे अनेक संवेदनशील शिक्षकों के लिए तब यह समझना प्रासंगिक हो जाता है कि जिन परिवारों की चाहरदीवारियों के भीतर आज भी भरे या अधभरे पेटों की क्षुधा को शांत करने के लिए 'बारा' सिस्टम हमारी सामाजिक वितरण प्रणाली के चेहरे पर थप्पड़ मारने के लिए एक वजह है। (भले ही उसके लिए हमारे पास कोई लिखित प्रमाण नही है) वहां विद्यालयों का पोषाहार कार्यक्रम मूलत: डेमेज कन्ट्रोल से शुरू होकर आपदा प्रबंधन और तब पोषण, स्वास्थ्यगत गुणवत्ता का पुण्य कार्यक्रम बन जाता है। यह विद्यालयों में संवेदनशील व्यवहार के पाठ्यक्रम की एक व्यावहारिक पाठशाला है, जिसका वैसा ही स्वरुप स्कूल सिस्टम में नजर आना चाहिए।

15 अगस्त, 1995 से प्रारंभ यह मध्याह्न पोषाहार कार्यक्रम सरकारी स्तर पर सामाजिक जवाबदेही की मुहिम के यप में प्रारंभ हुआ था। जब विद्यालयों में नामांकन, ठहराव, उपस्थिति, बच्चों में पोषण के स्तर व गुणवत्ता का नियंत्रण राजकीय प्रतिबद्धता का विषय था।

इसीलिए इसे मानकों के अनुसार संचालित कराने बाबत् सन् 2013 में जिस नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट को भारतीय संसद ने प्रकाश में लाया, वह एक प्रकार से अपनी व्यापकता में एकीकृत बालक विकास हेतु योजनाबद्ध रूप से खाद्य सामग्री के सार्वजनिक उपक्रमों में ग्रास रूटतक वितरण की एक मार्गदर्शी प्रणाली सिद्ध हुआ था। 2001 में पके भोजन को स्कूलों में न्यचूनतम दो सौ दिनों तक वितरित कराने की देशव्यापी व्यवस्था हुई, जिसके अन्तर्गत प्रति लाभार्थी बच्चा 300 कैलोरी वाली भोज्य सामग्री औरा 8.12 ग्राम प्रोटीन का इनटेक लक्ष्य निर्धारित किया गया। 2002, 2004, 2006, 2007 तक पहुंचते पहुंचते लाभार्थी बच्चे भी एक से पांच तक के स्थान पर आठ तक हो गए। साथ ही राज्य सरकारों को प्रति बालक एक रुपए केन्द्र सरकार द्वारा दिए जाने का भी प्रावधान हुआ। वर्ष 2006 तक तो प्रति बालक प्रति सकूल भोजन पकाने की राशि 01.80 रुपए तक बढ़ाकर इस लोक कल्याणकारी योजना को व्यापक सहमति के माहौल तक पहुंचा दिया गया।

पोषक तत्वों के मानक 450 कैलोरी व 12 ग्राम प्रोटीन तक निर्धारित किए गए। 2007 में 700 कैलोरी के पोषण व 20 ग्राम प्रोटीन तत्वों की परिपूर्ति तक मानकों तक के भोजन को व्यवस्था 'फूड सिक्योरिटी एक्ट 2013' की दिशा दर्शिका के अनुरुप थी।

विद्यालयों में छह दिवसीय मानकीकृत भोजन सामग्री तैयार करने से लेकर इसके वितरण, रख रखाव, वितरण सहित गुणवत्ता संधारण की व्यवस्था की क्रियान्विति और मॉनिटरिंग विद्यालयों के लिए आज एक बड़ी चुनौती है। यह इसलिए कि विद्यालय स्तर पर इस व्यवस्था की गुणवत्ता के निर्वाह की अलग अलग स्थितियां है।

प्रायः शिक्षक वर्ग इस व्यवस्था को एसएमसी, एसडीएमसी या किसी स्वतंत्र एजेंसी को शिफ्ट कर अपनी जिम्मेदारियों से किनारा कर लेना चाहता है, लेकिन सरकार और नौकरशाही इस तथ्य को अच्छी तरह समझती है कि पारदर्शिता, वैधता और विश्वसनीयता की दृष्टि से शिक्षक से बढ़िया कोई विकल्प नहीं हो सकता। यह भी कि यह शैक्षिक कार्यक्रम है, जो तब जब यह विद्यालय परिसर की सीमा में प्रवेश करता है, तो इसकी लगाम विद्यालय प्रबंधन के अलावा और किसी के हाथ कतई नहीं होनी चाहिए।

हमें लगता है– मिड डे मील की प्रभावी मॉनिटरिंग इस व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह भी महज रस्म अदायगी के स्तर पर हो, तो परिणामों में गुणवत्ता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नौकरशाही की मॉनिटरिंग का स्तर विभागीय कार्यवाही पर जाकर रूकता है। शिक्षा विभाग दिखावटी फटकार व चेतावनी से आगे नहीं बढ़ पाता है और एसडीएमसी तब जागती है, जब कोई शिकायत पंख फैलाती है। इस मध्य यह कार्यक्रम विद्यालय प्रशासन को स्वायत्तता और स्वच्छन्दता के दो धारों पर तैरता हुआ अनुभव होता है।

जहां स्वायत्तता है, वहां गुणवत्ता की पालना के प्रति जागृति भी है, लेकिन जहां स्वच्छन्दता है, वहां कच्चे माल के वितरण, प्रतिदिन की छात्र उपस्थिति और बनने वाले भोजन के कच्चे सामान को सप्लाई के बीच के मकड़जाल में फंसते जाने के आनन्द को नियंत्रित करना मॉनिटरिंग की पहली वरियता है। फिर प्राय3 छह दिनों के न्यूट्रीशन मानकों के आधार पर निर्धारित मेन्यू की व्यवस्था को तोड़ कर सुविधा व स्वादानुसार स्वरूचि भोजन तैयार कर परोसना भी सख्त मॉनिटरिंग का विषय है। बच्चों को दिए जाने वाले किसी भी प्रकार के भोजन की व्यवस्था का सबसे संवेदनशील पक्ष है।

शेष .... पेज 23 पर

पिकनिक पर साहित्यकार : प्रकृति के बीच काव्य गोष्ठी

प्रकृति की गोद में बही काव्य सरिता

काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद की अनूठी पहल कई कवि-साहित्यकार हुए शामिल

वरदड़ की नाल में साहित्यकारों के पिकनिक प्लान से मौज मस्ती, भ्रमण की खबर भी साहित्यिक लहजे में दी, पढ़िए हेमेंद्रसिंह की कविता

जिस लम्हे में छलक गया था, वो बाघेरी का नाका।
उस पल ही प्लान, पिकनिक ने काव्य मंच में झांका।
सुस्त पड़े इस ग्रुप में अपने, चलो कुछ तो हलचल लाए।
प्रमोदजी ने सोचा, हां चलो पिकनिक का प्लान बनाए
माहौल देख इस मौसम का, सब मस्ती की ओर मुड़े
लिस्ट स्वतः ही बढ़ती गई, बड़ी तेजी से सारे नाम जुड़े
उसमें फिर क्या देर लगे, जिसके अगुवा ही नारायण है
जो संस्था के सच्चे साथी है औरअद्धभुत कर्तव्य परायण है
मंच के मंडल की जमी मंडली,
इस मुद्दे पर शुरू किया विचार
स्थान की थोड़ी थी उधेड़बुन पर, दिन तय कर दिया रविवार
स्थान को लेकर सामने आए, इधर उधर के काफी नाम
हां कोई बोले गौरीधाम तो कोई बोले, चलो परशुराम
करधर पर हुई सहमति कि ये मस्ती वहीं पे छाएगी
सलीम सर ने भी करी घोषणा, बस सोफिया से आएगी
अपने अपने उठा के झोले, फिर हम सारे निकल पड़े
बस में सीटे खाली थी, फिर एसपी साहब आए खड़े खड़े
देख यहां की छटा निराली, हर दिल इसमें खो सकता है
साथ यदि हो श्रेष्ठ कवि, इससे बेहतर क्या हो सकता है
भ्रमण में सबसे अच्छा ये कि नजदीक किसी का घर नहीं
अच्छा गन्दा जो भी सुनाओ, श्रोता के भगने का डर नहीं
इन मस्त वादियों में
ये कविगण जब शब्द संस्करण गढ़ने लगे
उनके सृजन की प्रसंशा में,
सब अलंकरण कम पड़ने लगे
पुण्य प्रकृति और शब्द संस्कृति ने मिलकर,
सब कुछ गुलजार किया
मैं भी आ पाया इनके बीच,
तो मन ही मन प्रभु का आभार किया
चाहे मेन्यू में हो खीर पूड़ी, चाहे दाल और बाटी बने
मेरी अर्ज है इतनी की, ये पिकनिक एक परिपाटी बने
बार बार चले ये मस्ती की टोली,
न इसमें कोई संशय हो
हँसते खेलते यू ही हमेशा, हम सबकी मंजिल तय हो
सबके काव्य अनुपम हो औरमधुरिम हो सबकी लय हो
हां तो सारे मिलकर बोलो, पिकनिक प्लान की जय हो

तुम्हारे नाम @ 6 दशक में समाज की तस्वीर

वरिष्ठ कहानीकार तथा कवि कमर मेवाड़ी द्वारा सन् 1960 से लेकर 2010 तक लिखी गई तमाम कविताओं का संग्रह है 'तुम्हारे नाम'। इसमें मौजूद अधिकतर कविताओं की अन्तर्वस्तु समाज में व्याप्त विषमता, शोषण, अत्याचार तथा अन्याय को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्तियों तथा ताकतों के विरोध के स्वरों से निर्मित होती है। ये कविताएं समाज की परिधि में मौजूद वंचित-दमित तथा शोषित वर्ग की पक्षधर कविताएं है, जिनमें प्रतिरोध की ध्वनि कभी मंद नहीं पड़ती, बल्कि अंत तक कायम रहती है। कवि अपनी कविता को हरेक तरह से, हरेक स्तर पर काम लेने को तत्पर रहता है- कभी हथियार के तौर पर, कभी उपकरण के तौर पर, कभी तर्क के तौर पर और कभी कभी संवाद और सम्बोधन के तौर पर भी, जो कवि की कुशलता को, परिपक्वता को प्रकट करता है।

काव्यकथ्य के प्रति कवि की ईमानदारी तथा वंचित वर्ग के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का मामला महज सैद्धांतिक नारा बनकर नहीं रहता, बल्कि वह आमने- सामने आकर कविता की ताकत के व्यावहारिक पक्ष के क्रियान्वयन का यथार्थपरक मामला बन जाता है। सामाजिक विद्रूपताओं के खिलाफ वह कभी व्यंग्य का उपयोग करता है, तो कभी समाज को इकट्ठा करने का आह्वान भी करता है- 'आओ/ हम नई जमीन तोड़कर/ अपना प्यार रोपें/मत भूलो एक दिन अवश्य/ यह अंधेरा छंट जाएगा/ ...सुना/ एक दिन अवश्य/ भूखमरी और बेकारी/ हमारे तुम्हारे कंधों पर चढ़कर/ शहर बदर हो जाएगी'। (नई सुबह, पृष्ठ 21)

अपने सामाजिक यथार्थ की निर्मम तथा निष्पक्ष पड़ताल करने के क्रम में कवि प्रामाणिकता, प्रतिबद्धता तथा संवेदनशील दृष्टि का परिचय देता है और समाज के प्रताड़ित तबके की जरूरतों तथा समानता के अवसरों की तलाश को अपनी कविता का हासिल बनाकर सक्रिय होता है। इस नजरिये से देखें तो लगता है, ये कविताएं, एक्टिविस्ट किस्म की कविताएं हैं, जिनका मिजाज संघर्षशील और जुझारु किस्म बनकर उजागर होता है- बोलो, क्या हम इतने कमजोर है कि चुप रहे/ और एक पूरी की पूरी शताब्दी/ हम पर लाठियां, गोलियां और भाषणों की बौछार/ करती हुई गुजर जाए/ सुनो/ उससे पहले कि अन्दर की गर्मी से/ हमारे दिमाग जल जाए/ हम सब मिलकर बदल दें/ व्यवस्था पूरे के पूरे विश्व की'। (शताब्दी का दर्द पृष्ठ 39-40)

जीवन के उबड़-खाबड़ रास्तों पर संघर्षशील जनता के साथ कदम मिलाते हुए कवि समाज में व्याप्त तमाम तरह की करुण

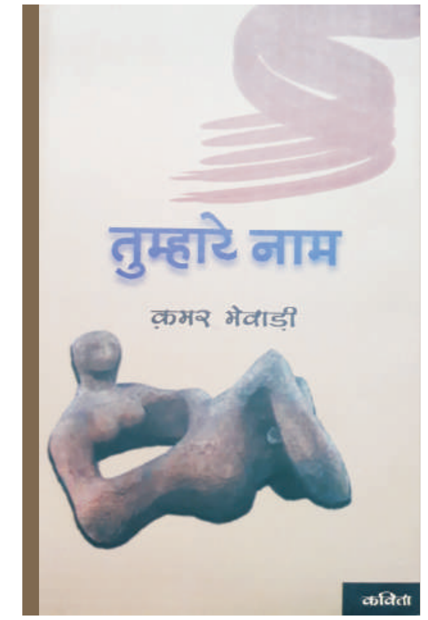

तुम्हारे नाम
(काव्य संग्रह)
कमर मेवाड़ी
नीरज बुक सेंटर दिल्ली
प्रथम संस्करण 2017
पृष्ठ संख्या 200
मूल्य 400/-

तथा जन विरोधी प्रवृत्तियों का विरोध और मुकाबला करता नजर आता है और ऐसे वक्त में कविता उसके लिए हथियार का काम करती है। इसलिए कवि को आडम्बर या कि दिखावे की जरूरत नहीं पड़ती। यहां जो कुछ है, वह साफ सीधा और प्रत्यक्ष है- 'मैं उन्हें दोष नहीं देता/ जो सिर्फ इसलिए जिन्दा है/ कि वर्तमान के सुनहरे पृष्ठों को फाड़ फेंके/ रोशनी को बुझा दें/ और उजाले की कब्र पर अंधेरे की चादर चढ़ा दें/ ... भविष्य/ उन सबके नाम/ किसी सफेद दीवार पर/ खून से लिख देने का इन्तजार कर रहा है।'

(एक यकीन, पृष्ठ 67-68)

1960 से 201 तक के पचास बरसों के दौरान लिखी गई इन कविताओं में तत्कालीन समय परिवेश की तमाम प्रवृत्तियों तथा तत्वों की पड़ताल मौजूद है, तो साथ ही साथ कविता में भाषा तथा अन्तर्वस्तु के समयानुकूल परिवर्तनों की गूंज भी सुनाई देती है। कमर मेवाड़ी की कवि के तौर पर जो प्रतिबद्धता है। वह समाज विरोधी तत्वों के प्रतिरोध तथा शोषण के तमाम कारकों के प्रतिकार पर केन्द्रित है तथा इसमें किसी प्रकार का विचलन नहीं है और भटकाव भी नहीं है। समाज सापेक्ष रचनाकार की सार्थकता इसी तथ्य में निहित है। 'तुम्हारे नाम' की कविताओं को इसी नजरिये से पढ़ा जाना चाहिए, जो हमारे मन में जीवट की चेतना को प्रेरित करने में सफल दिखाई पड़ती है।

कुन्दन माली
170, टेकरी, जिला उदयपुर

पेज 20 का शेष........

उसके द्वारा फूड पॉइजनिंग होने के खतरों से बचाव और चौकसी, मॉनिटरिंग का यह पक्ष सर्वाधिक सूक्ष्म निरीक्षण का विषय होना चाहिए। क्योंकि बच्चों को सेहत और नन्हीं जान से खिलवाड़ अक्षम्य अपराध है।

इस बीच एक और योजना कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों के पोषण के लिए अन्नपूर्णा दुग्ध वितरण की 2 जुलाई 2018 से जन कल्याणार्थ समर्पित है। सप्ताह में तीन दिन कक्षा 1 से 5 के बच्चों को 150 मिली और कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए 200 मिली दूध का वितरण प्रार्थना सभा के बाद किए जाने संबंधी इस योजना से 62 लाख बच्चों पर 218 करोड़ का व्यय एक सूक्ष्म वात्सल्यपूर्ण चिंतन की वृहत शासकीय प्रबंधन की चुनौतियों से जुड़ा विषय है। विद्यालयी समय विभाग चक्र से इस व्यवस्था का सामंजस्य, दूध की उपलब्धता, शक्कर के अभाव में इस दूध के पोषणगत लाभों से अभिभावकों को कन्वीन्स करना और प्रार्थना सभा के तत्काल बाद दूध और चन्द घंटे में पोषाहार, इनके बीच बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का या इन्सेट अनुत्तरित यक्ष प्रश्नों का जवाब देने को हम समस्त बड़ों को तैयार रहना चाहिए कि हमारे शिक्षण संस्थानों का मन्तव्य और गन्तव्य क्या है ?

ज्ञान परोसना या सुविधाएं ? कोई सीमा रेखा तो खींचनी होगी-

'सुखार्थी कुत्तौ विद्या, विद्यार्थी कुत्तौ सुखम्'

कहीं ऐसा न हो कि हम एक ऐसी अभिभावक और विद्यार्थी पीढ़ी को कन्ज्यूमर के रूप में ला खड़ा कर दें, जो स्कूल-कॉलेजों को प्रोविजनल स्टोर या सुपर बाजार समझ वहां अपनी रूचि और अनन्त अपेक्षाओं के साथ प्रवेश करने में जरा भी न हिचकें- सुविधाएं बिना मोल। स्टोर या बाजार में तो फिर भी पेमेन्ट करना होता है...।

लेकिन फिर तर्क, भ्रम, उहापोह, सन्देह, प्रश्न दर प्रश्न की अंधी खोह में सुदूर डूंगर पहाड़ की स्कूल का वह अबोध बच्चा याद हो आता है, जिसकी एक गरीब मां है। एक रोटी में आधा हिस्सा बंटाती नन्हीं बहिन है और एक और भूखे पेट सोने को अभिशप्त छोटा भाई जिसके आज खाने का 'बारा' नहीं है। एक ही तो सहारा है स्कूल में ससम्मान, सस्नेह दी जा रही घूघरी।

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, कांकरोली
मो. 94602 52308

पाठक प्रतिक्रिया

जयवर्द्धन ने कलमकारों को दिया मंच

जयवर्द्धन पत्रिका मई 2018 का अंक पढ़ा। हर पृष्ठ, हर रचना, हर कॉलम सुन्दर व आकर्षक लगा। संपादक मंडल को पत्रिका के त्रुटि रहित प्रकाशन पर बधाई। मेरे ख्याल से राजसमन्द अंचल की साहित्य व समाचार परक जयवर्द्धन पत्रिका एकमात्र मासिक पत्रिका है। श्री द्वारकाधीश मंदिर पर लेख अच्छा लगा। इस समस्या का शीघ्र समाधान वैष्णवजन के हित में है। तीखी मिर्ची कॉलम बहुत भाया। एक सुझाव पत्रिका में कविता, गज़ल कहानी व साहित्य हेतु एक दो पृष्ठ और बढाए जाए, ताकि राजसमन्द के नए व स्थापित कलमकारों का प्रदेश में सम्मान हो सके।

अश्वनी कुमार चावला,
अध्यापक राजनगर 9983593710

देश के कई अंचलों में जयवर्द्धन की पहुंच

जयवर्द्धन पत्रिका की लोकप्रियता हर अंक के साथ निरन्तर बढ़ती जा रही है। राजसमन्द जिले और मेवाड़ के लोग जो अन्य शहरों और महानगरों में निवास करते हैं, वो इस पत्रिका के माध्यम से राजसमन्द और मेवाड़ से जुड़े रहने का अहसास महसूस करने लगे हैं। आठ सौ पत्रिका तो डाक द्वारा हर महीने देश के कई हिस्से में भेजी जा रही हैं। निरन्तर इसमें इज़ाफा हो रहा है। अच्छे विषय और अच्छी खबरों से लबरेज पत्रिका अपनेपन की भावना का प्रस्फुटन करती है।

जितेंद्र लड्ढा, विनय कम्प्यूटर, सौ फीट रोड राजसमंद

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु ट्यूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीटयूट

sunshininstitute9@gmail.com

हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705
ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

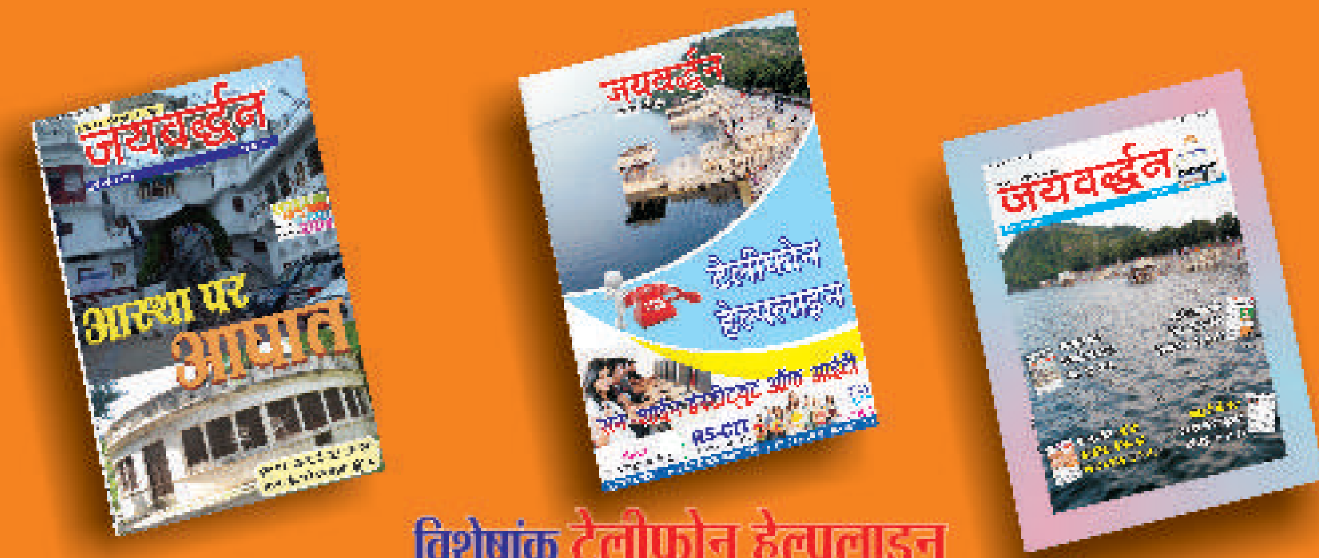

विशेषांक टैलीफोन हेल्पलाइन
मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिपशन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

अणथाक प्यार

एक नौजवान मोट्यार जोबन रे भार सू भरियोड़ी छोरी रा कवलां गालां ने आपणी हथेलियां सू दबावतो बोल्यो। डारलिंग, म्हारी आंख्या मांय थारो चांद सो मुखड़ो अर जादू भर्‌या ये नैण रहवे है। एक पल भर रे वास्ते भी नी मूं भूल सकूं।

हाय डियर! थूं म्हने इत्तो याद क्यों करें हैं ?

क्यूं कै म्हूं थारा सू अणथाक प्यार करू हूं। उण मोट्यार छोरी री वेणी खोल दी। गेरा गेरा नागन जस्या काला केश खांधा माथे झुलवा लागा। मोट्यार उण रा कवलां कवलां केशां री जुल्फां ने आपणा गालां सूं अड़ावा लागो।

थूं म्हारी जिन्गानी री सांच वण चुकी है। थूं म्हारे कने व्हेवे तो ही म्हारी जिन्दगानी है। मोट्यार रा होठ छोरी रा रांता होठां री कानी पूगवा लागा। छेटीपणो कम व्हेगा लागो। दोन्यू रे डील री दूरियां खतम व्हेवा लागी।

इतराक मांय छोरी री नाजुक हथेली आड़ी आयगी। पण म्हने तो थोड़ा दिना पछे अठा सूं जावणो है। फैर पछे कांई व्हेला ?

पछे तो म्हूं थारी ओल्यू करतो- करतो भीतां सूं माथो फोड़ दूला मजनूं रो भेस धारण कर लेऊलां। पूरी जिन्गानी थारी उडीक मांय तड़फ ने पूरी कर दूलां। मोट्यार छोरी री हथेली हटावा री कोशिश करता थका या वात कही।

आह! म्हारा मजनूं थूं कतरो वालो अर प्यारो है। म्हारा सूं कितरो परेम है। म्हारे बिना थूं इण तरह पटकाय पटकाय ने पिराण तोड़ देवें, अर जिन्गानी मटियामेट कर नाके। यो ठीक नी है, म्हूं हमेशा थारे कनै इज रहुंली। अरे! कांई केय री है? मोट्यार फाटी आख्यां सूं छोरी ने देखवां लागो।

सांची कहूं हूं। चालो सगलो संसार छोड़ने अठा सूं भाग जावां। कठेई छेटी घणा छेटी। सगला सामाजिक मरयादां ने पाछै छोड़ीन। सारा बन्धना ने तोड़ीन। पछे म्हूं रहुंली, थां रहोला अर आपणों प्यार रहेला।

मोट्यार प्यार रा आन्धा झंझाल सूं धरती माथे उतरवा लागो। उण रै नैणा रे सामे उण री भोली सी बिनणी अर एक बरस सो बालक पिन्टु री तस्वीरां घूमवा लागी। पछै सर्विस री वात दिमाग माय आई। पचास हजार री नौकरी माथे लात मारो। हरी- भरी रूंखावली जस्सी घर गरहस्थी माय लाय लगाओ। पछै बिना घर बार सूं रवड़ता रहवो। न कोई ठोर ठिकाणों अर न काई मान मरयादा अर इज्जत।

कांई कसोच रह्‌या हो। म्हारा बालम जी। थां तो म्हारां सू अणथाक प्यार करो हो नी? चालो इणीज टेम म्हूं इण हालत माय आपरै सागे आवा ने तैयार हूं।

प्यार तो थांरा सूं मोकलो हैं। पण इतरो नहीं के सब कुछ छोड़ ने थारे लारे भाग जावुं। जाणे वो मोट्यार मन ही मन माय बड़बड़ायो। फेर जोर सूं फंफाड़ो खाय ने पलटियो। कमरा सूं बाहरे आय ग्यो। उण ने जावा रे पछै छोरी घणी दाणी तक मुलकती रही।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

ठाठ से निकली कावडय़ात्रा, गूंजे भोले के जयकारें

राजसमंद से कुंभलगढ़ के लिए रवाना हुई कावड़यात्रा में शामिल नगरपरिषद सभापति, प्रतिपक्ष नेता, यात्रा संयोजक सहित अन्य श्रद्धालु।

कावड़ियों ने परशुराम का किया अभिषेक

राजसमंद. अच्छी बारिश, खुशहाली की कामना को लेकर राजसमंद से परशुराम महादेव मंदिर तक कावडय़ात्रा रविवार को ठाठ बाट से रवाना हुई। कंधे पर कावड़ लिए भोलेनाथ का गुणगान करते हुए और बैण्ड की सुरमधुर स्वरलहरियों पर थिरकते नाचते श्रद्धालुओं आगे बढ़ रहे थे। राजसी लहजे में विभिन्न झांकियों के साथ कावडय़ात्रा शहर से पार हुई।

कांकरोली में बड़े दरवाजे के पास गुप्तेश्वर महादेव में सुबह सात बजे से ही कावडियों के आने का सिलसिला शुरू हो गया और पंजीयन के बाद कावड़ सजाकर भक्तजन कतारबद्ध हो गए। ठीक आठ बजे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ आरती व भोलेनाथ के जयकारों के साथ कावडय़ात्रा रवाना हुई। अधिकांश कावडिय़े केसरिया वेशभूषा में थे और सबकी कावड़ केसरिया रंग की ही थी। सबसे आगे बैंड भोलेनाथ के भजन प्रस्तुत कर रहा था। उसके पीछे घुड़सवार कावडय़ात्रा व वीरता का संदेश दे रहा था। उसके पीछे कावडिय़े कतारबद्ध कंधे पर कावड़ लिए कदम ताल मिलाते चल रहे थे। कार में चल रहे डीजे पर श्रद्धालु भोलेनाथ की भक्ति व मस्ती में थिरकतेए नाचते हुए चल रहे थे। कावडय़ात्रा चौपाटी, टैक्सी स्टैण्ड, जलचक्की, पीर बावजी स्थानक, किशोरनगर मण्डा, पुराना अस्पताल, कलालवाटी, हुसैनी मस्जिद, मामू भाणेज रोड, दाणी चबुतरा, सदर बाजार, कबुतरखाना, फव्वारा चौक, हाइवे 8 से सनवाड़ होते हुए कुंभलगढ़ के लिए प्रस्थान कर गई। इस दादौरान नगरपरिषद सभापति सुरेश पालीवाल, शिवसेना प्रमुख हेमंत गुर्जर, नगरपरिषद प्रतिपक्ष नेता अशोक टांक, कावड़ यात्रा संघ संरक्षक मंगलमुखी महाराज आदि मौजूद थे।

कावडियों का जगह जगह स्वागत

कावडय़ात्रा का मुंडोल, पुठोल, सापोल, गजपुर सहित कई जगह कावडियों का स्वागत किया। जगदीश पालीवाल धर्मेटा की ओर से पुठोल में कावडियों को अल्पाहार कराया गया। इस दौरान गोवर्धनलाल पालीवाल, लक्ष्मीलाल पालीवाल, दीपक पालीवाल, मांगीलाल पालीवाल, मोहनलाल पालीवाल, दिनेश पालीवाल, रामरतन पालीवाल, नीलेश पालीवाल थे।

चप्पा-चप्पा, चस्पा- चस्पा

हम चिराग लेकर कब से उस महान आत्मा को ढूंढ रहे हैं, जिसने पहले पहल इश्तहार का आविष्कार किया। वो तो अपना काम कर गया, लेकिन हम जैसे कितनों का काम तमाम कर गया। शुरू से ही हमारी इच्छा थी कि हमारा मकान ऐसी जगह हो, जो दूर से ही सबको दिखाई दे जाए। आगन्तुकों को किसी से पूछना ही न पड़े। अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए हमने उपयुक्त जगह बड़ा सा प्लॉट लें, तन-मन और लाखों का धन लगा बड़ा खुबसूरत मकान बनवाया।

सच हुए अपने सपने को खूब दूर दूर से दिखता देख हम फूले नहीं समा रहे थे। मकान के नांगल की तिथि अभी निश्चित की जानी थी कि एक सुबह न केवल उसकी चारों दीवारें, बल्कि दरवाजें के दोनों खम्भों तक पर आड़े- टेड़े पोस्टर चिपके दिखे। लगा किसी ने हमारे खुबसूरत चिकने चेहरे पर दस बारह एडिसिव प्लास्टर चिपका उसका हुलिया बिगाड़ दिया हो। घुस्सा तो इतना आया कि पूछिए मत, उसे हटाने की कोशिश की तो आधे चिपके रह गए और कुछ दीवार पर डिस्टेम्पर साथ लेकर ही उतरे। दीवारों पर जगह जगह बन गए पेबंदों को ठीक कराने का विचार अभी हम कर ही रहे थे कि अगले दिन कई दूसरे विज्ञापन दीवारों पर चस्पा मिले। पिछली सड़क की तरफ की पूरी दीवार पर तो बड़े बड़े अक्षरों में एक रोग, उसके दवाखाने का नाम और तत्काल मिलें, यह लिखा था। लिखा देख हमारा खून खोल उठा। ''दीवार क्या उनके काकाजी की है, जो बिना हमारी इजाजत के काला पीला कर दिया। हम मामला कचहरी में ले जाएंगे। हमें किसी भी तरह की कानूनी कार्रवाई के लिए इश्तहार लगाना मना है। '' का इश्तहार लगाना जरूरी बताया गया, वह भी सभी और अलग अलग और पूरी पूरी दीवार पर लिखना होगा। हमारा तो माथा घूम गया। जिसके लिए दूसरों को मना करना है। वही काम हमें करना होगा और मकान की खुबसूरती? अरे! आपको अपने मकान की खुबसूरती की पड़ी है और यहां हर गली, हर सड़क, हर चौराहा पोस्टरों से पटा पड़ा है। उसकी परवाह किसें है। बड़े-बड़े हॉर्डिंग्स पूरे शहर को ढकने को तत्पर है और आप है कि अपने घर की खुबसूरती को रो रहे हैं। हमें झिड़कते हुए इल्म कराया गया।

चलिए, आपको अपने ही शहर का एक चक्कर लगवा देते हैं। इस गली से ही शुरु करते हैं। ये बिजली खम्भा जरूर है, पर ऊपर से नीचे तक चिपके पोस्टर कुछ और ही बखान कर रहे हैं। नीम का वो पेड़, उसके तने पर अनगिनत कीले ठोक एसटीडी पीसीओ, ब्युटी पार्लर, ब्लाउज की सिलाई, किराने की दुकान, दूध की डेयरी, आटा चक्की, कपड़ों की प्रेस न कितने बोर्ड यहां वहां टांग दिए गए हैं।

गोया ये पेड़ इन सब बोर्ड मालिकों की मिल्कियत हो या इन सबने मिलकर दशकों पहले ये पेड़ इसी उद्देश्य के लिए लगाया हो। अब जरा ऊपर देखिए कपड़े का एक बेनर लकड़ी के दो डंडों व डोरी के सहारे बिजली के खम्भे और पेड़ की डाल से बंधा है। पेड़ की डाल से सड़क के बीचोबीच मजे से झूल रहा है। धूप, हवा और पानी के प्रकोप से कमजोर हुई डोरी टुटी और लकड़ी किसी राहगीर का सिर फोड़ गई, तो इसमें उस बिचारे बैनर लगाने वाले का क्या दोष?

गली का नुक्कड़ तो बिचारे इश्तहारों के लिए ही बनाया गया है। पूरब- पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चहुं दिशाओं में तीर के निशानों वाले कई दर्जन बोर्ड, पोस्टर और लोहे, लकड़ी के स्टैंड यहां वहां सड़क पर काफी आगे तक स्थान पाते हैं। रास्ते चलने वाले अपने हाथ-पैरों की स्वयं सुरक्षा करें। इस बोर्ड की कमी आपको यहां जरूर अखरेगी। नवागन्तुक को कॉलोनी का मकान ढूंढने में कई परेशानी न हो, इसलिए नगरपरिषद ने कॉलोनी का पूरा नक्शा, मय मकान, नम्बर और नाम के बकायदा एक बोर्ड पर बनवाकर हर कॉलोनी में लगवा दिया। पर पोस्टर चिपकाने वालों के हाथों में ऐसे बोर्ड देखते ही खुजली चलने लगती है। क्या मजाल जो बोर्ड पर लिखी सूचना या नक्शे का एक भी हिस्सा उस पर चिपके पोस्टरों से बाहर झांकता रह जाए।

सरकारी इमारतें, अरे जनाब! ये तो बनाई ही पोस्टर चिपकाने के लिए है। केवल बालिगों के लिए बनी फिल्मों के अश्लील पोस्टर हो, बॉडी मसाज, तेल व विज्ञापन या काम के समय काम आने वाली कोई चीज, कोई कुछ कहने वाला तो नहीं चाहे, जो चिपका दो। चौराहों पर स्वतंत्रता सैनानियों की प्रतिमा के नीचे लगे पट्ट तक को लोग नहीं छोड़ते। उस पर चस्पा 'शादी के पहले, शादी के बाद' जैसे पोस्टरों को उन महापुरुष के त्यागपूर्ण जीवन के परिप्रेक्ष्य में देख दु:ख होता है। देश के निर्माताओं की मूर्तियों का ये हश्र, आंखों में अश्रु ले आता है।

अरे! ये क्या, आप तो अभी से रोने लगे। अरे! अभी तो बहुत कुछ देखना बाकी है। अपने आंसू अभी बचा कर रखिए। अधिकांश पर्यटन स्थल प्रेमी युगलों के प्यार के इजहार के सबूत के तौर पर इस्तेमाल किए जाते हैं। यहां दो दिल अपने आगमन को वहां की दीवारों, दरवाजों पर मय दस्तावेज के दर्ज कर देते हैं। उनकी दीवानगी के ये दाग वहां के सौन्दर्य को दूषित करें या दूसरे ट्यूरिस्टों को दु:खी करें, उन्हें इससे क्या?

परिवहन के साधन तक इश्तहारों से बच नहीं पाए हैं। ट्रेन का कम्पार्टमेंट हो या टॉयलेट या फिर बोगी का बाहरी हिस्सा अजीबोगरीब उत्पादों के ढेरों पोस्टर जगह जगह चस्पा मिलेंगे। सुरक्षा संबंधी निर्देशों तक पर गुटखा, बीड़ी, सिगरेट के विज्ञापन बेझिझक चस्पा कर दिए जाते हैं। स्टेशनों पर तो जैसे सभी कुछ पोस्टर प्रेमियों के कब्जें में हैं। बैन्चें, खम्भे, प्लेटफार्म, पुल, प्रसाधन, प्रतीक्षालय सब कुछ। सफर रेलगाड़ी से कर रहे हैं या बस से, शहर बाद में शुरू होता है विज्ञापनों के, हॉर्डिंग पहले दिख जाते हैं। सम्पन्न उत्पादों के पोस्टरों को तो शहर के शुरुआत पर बनी दीवारों तक की दरकार भी नहीं होती। रोशनी से सराबोर विशालकाय हॉर्डिंग शहर की सीमा पर खड़े कर दिए जाते हैं और जैसे ही दीवारें दिखाई देने लगती है, उन पर भी लगे इश्तहार दूर से दिखाई दे जाते हैं। हर विज्ञापन का इतना दोहराव कि उत्पाद उसके प्राप्ति स्थल का पता, फोन नम्बर वगैरह सभी कुछ आपके दिमागी कम्प्यूटर की मेमोरी में अच्छे से चस्पा हो जाए।

बिना डिजिटल हॉर्डिंग के भला कोई शहर कैसे विकसित कहा जा सकता है। क्रिकेट और फुटबॉल मैचों को प्रदर्शित करते कम्प्यूराइज्ड हॉर्डिंग चौराहों पर लगते ही शहरवासियों का सीना गर्व से फूल जाता है। शहर के हर चौराहे पर चारों ओर लगे बड़े बड़े बोर्ड, ऊंची ऊंची इमारतों पर रोशनी में नहाए वृहताकार हॉर्डिंग्स ही उस शहर का आकार प्रकार निर्धारित करते हैं। ये चौराहों पर न सिर्फ दाएं बाएं लम्बी कतारों में बल्कि एक पर एक चढ़ा ऊपर आसमान तक पहुंचा दिए जाते हैं। इन्हें देखते हुए गाड़ी चलाने की जुर्रत किसी ने की तो उसका भी ऊपर पहुंचना तय है। आंधियों से गिरकर ये किसी को चोटग्रस्त कर दें, तो मुआवजा देने के लिए सरकार है न। कोई कीला खांपा ढीला हो, नीचे गिर किसी की जान का दुश्मन बन गया तो उसमें भी दोष केवल गुत्वाकर्षण के प्रभाव का है। पोस्टरों पर अश्लीलता का तड़का भी लाजमी है। कपड़ें की एक बड़ी कम्पनी ने उनका ब्रांड नहीं अपनाने पर आदम और हवा की सी स्थिति में स्त्री पुरुष का एक हॉर्डिंग ही शहर के बीचोंबीच लगवा दिया। अब महिलाओं, सज्जनों, वृद्धों जिस किसी को शर्म आए, वो अपनी निगाहें, नीचे कर लें। कानून कायदा, आचार संहिता ये सब किताबों में ही शोभा देते हैं।

कुछ खास मौकों पर तो जैसे इश्तहारों की बाढ़ ही आ जाती है। शहर में किसी जादूगर का आगमन हो या सर्कस का। पोस्टर और इश्तहार रातोंरात शहर का चेहरा बदल देते हैं। शहर में प्रवास करने वाले साधु सन्यासियों के जगह जगह लगे इश्तहार और बड़े बड़े हॉर्डिंग का औचित्य तो हमारी समझ में आज तक नहीं आया। ये लोग बाजीगर है या बाजार वाद का हिस्सा है। कुछ भी हो, इन्हें भी अपने आपको विज्ञापित करना होता है। आजकल तो लोग शादी ब्याह तक के हॉर्डिंग्स लगा देते हैं। ऐसी ही एक राजशाही शादी पर खास मेहमानों के स्वागत में पूरे शहर में लगे छोटे बड़े एक हजार से ज्यादा हॉर्डिंग्स आम आदमी की गरीबी को अंगूठा दिखाते दिख रहे थे। चुनाव यदि कॉलेज, नगर निगम का हुआ तो इश्तहार शहर के चप्पे चप्पे पर चस्पा हो जाएंगे। खम्भे, पेड़ों, भवनों, चौराहों सभी का भरभूर इस्तेमाल इश्तहारों के लिए होगा। विधानसभा या संसद के चुनाव हुए तो कहने ही क्या, न कोई सड़क वाली बचेगी, न आसमान नीला। जमीन पर जगह जगह चिपके होंगे चुनाव चिह्नों के सतरंगें पोस्टर और ऊपर हर ओर लगी होगी उम्मीदवारों के चेहरे वाली रंग बिरंगी फर्रियां। चौराहे देश के इन कर्णधारों के कटआउट के से अट जाएंगे। और तो और प्रतिपक्षी को परिलक्षित प्रदर्शित करते गधे, सूअर और भैंसे जैसे शरीर भी इश्तहार चिपकाने के लिए इस्तेमाल किए जाएंगे।

जिसे देखों, जहां देखों, जब देखों पोस्टर चिपकाने में लगा है। अपने शहर के चप्पे- चप्पे की ऐसी दुर्दशा पर आहत हमारा सौन्दर्य प्रेमी हृदय राहत पाने प्रकृति की और मुखातिब हुआ। सोचा इन इश्तहारों की भीड़ से दूर पहाड़ों और प्रकृति की गोद में सिर छिपा कुछ दिन सुकून पाएंगें। पर जब हमने हिमालय की खुबसूरत बर्फीली वादियों के सर्पीले रास्ते के दोनों और बड़ी बड़ी कम्पनियों के विशालकाय हॉर्डिंग्स खड़े देखे, पहाड़ों के सीने में भौंक दिए गए। लोहे के भाले देखें। चट्टानों पर चिपके पोस्टर्स देखें, लम्बे- लम्बे देवदार के तनों को खुरच कर चिपकाए गए। इश्तहार देखें, तो हमारा दिल जार जार रो उठा और हम एक हाथ में चिराग और इश्तहार देखें, तो हमारा दिल जार जार से उठा और हम एक हाथ में चिराग और दूसरे हाथ में तेल पिलाया डंडा लेकर निकल पड़े। उस महान आत्मा की खोज इश्तहार को आविष्कार किया था।

श्रीमती रेणु देवपुरा
227 सुन्दरवास (उत्तरी) उदयपुर,
राजस्थान मो. 92144- 66039

तुम ही जीवन का आधार

मेरे जीवन का अर्थ क्या इति क्या,
तुम ही आदि और तुम ही अंत हो।
तुम मेरे भीतर, तुम ही बाहर,
तुम सर्वस्व, तुम ही सर्वोपरि।
तुम ही मेरा जीवन हो।।
मछली को जल बिन तड़पते देखा है
मां के वात्सल्य से रिक्त
बालक का करूण क्रंदन देखा है।
प्रेम की पीर में विकल
विरहिणी की पीड़ा को देखा है।
मैं भी तो गिर गई हूं पीड़ाओं के
सागर में
कहने को सांसें चल तो रही हैं,
किन्तु मेरी सांसें तो
उसी दिन तुम्हें समर्पित हो गई,
जिस दिन से तुमने संभाला है।
कामनाएं कभी मिटी तो कभी भड़की
पर तुमने ही तो व्यथित मन को
संभाला है।
एक पल की अनुभूति और
हृदय कमल खिल उठता है।
तुममें और मुझमें अंतर नहीं शायद
जो तुम, वही मैं।
किन्तु अगले ही पल
कौनसा पर्दा डाल देते हो ?
एक तरफ तुम, दूसरी तरफ मैं
खड़ी ताकती रह जाती हूं।
मैं तुमसे अलग कहा ?
तुम्हीं तो मुझे सुनते हो
मैंने देखा ही कब ?
तुम्हीं तो मेरी आंखों के भीतर
बस कर देखते हो।
तुम प्रकृति हो या प्रकाश,
निर्मल हो या मलिन,
सारे जग में तुम्हीं दिखाई देते हो।
फूलों में हंस रहे हो तुम,
पत्तियों में डोल रहे हो।
वनस्पतियों का रस और
हरितिमा हो तुम
सूर्य, चंद्र, नक्षत्र की चमक हो तुम
बादलों की गरज,
विद्युत की चमक हो तुम।
मेघों का वर्षण हो तुम
इस संसार में तुम हो या तुममें संसार
आकाश सा धैर्य, जननी सा वात्सल्य
क्या बखान करूं तुम्हारा
तुम्हें पाकर कुछ पाने की
कामना नहीं मुझे
तुम्हारा प्रेम, तुम्हारा नाम,
तुम्हारा अहसास हृदय में।
सच तो यही है
तुम ही मेरे
जीवन का
आधार हो।।

रेखा खराडी
डूंगरपुर,

म्हने कूटे, बापड़ों

आकोदन, दारू पी न,
म्हंने कूटे, बापड़ो,
कदी लाई न, नी दी दो,
हाड़ी रो, एक काँथड़ो।

कतरो म्हूं, काम करुं,
फळाणों न, ढ़ीकड़ो,
तोई खून, पीवतों रे,
वणी न, मोटो चिंचड़ो ।

धत्त वेई न, रोवतों फरें,
हूजाई राखें, थोबड़ो,
खाई-खाई न, वेई रो,
बोकड़ो रो, बोकड़ो।

म्हूं पीर, परी गी तो,
कुण नाके ला, टुकड़ो,
खुणा मा, पड़्यो रे ला,
वणी न, मांदेलो कूकड़ो।

घणों खावां ने, दौड़े ला,
थांने, यो थांणो झूंपड़ो,
पछे भाव, निकाळ जो,
हाथ मा लेई न कूंचड़ो।

पछे म्हंने, लेवा आवों ला
पगा मा, दबाई न पूंछड़ो,
गळक- गळक कर न,
म्हंने हुणावों ला, दुखड़ो।

राजन अणा टाबर टाबर्याऊं
म्हांरो लागी जा, जीवड़ो,
ये नी वेतां तो म्हूं थांने,
कदी नी वताती मुखड़ो।
कदी नी वताती, मुखड़ो।

राजेन्द्र सनाढ्य राजन
कोठारिया (व्याख्याता)
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद
मो. 99829-80777

शराबबंदी होने से इतिहास बदल जाएगा

शराबबंदी होने से, अब इतिहास बदल जाएगा
मंडावर में भी, अब राम राज आ जाएगा।।

कोई नहीं पीयेगा शराब, और न कोई दंगा मचाएगा।
मंडावर में भी, अब राम राज आ जाएगा।।

नन्हें मुन्ने बच्चों के पिताजी, अब रोज घर को आएंगें।
संग में फल-मिठाई व खिलौने, और खुशियां भी लाएंगे।।

सुनो नारियों मंडावर की, आपका सुहाग बच जाएगा।
शराब बंद करवा के, मंडावर भी नशा मुक्त हो जाएगा।।

सरपंच प्यारी के नेतृत्व में, सबको अलख जगानी होगी।
बहन-बेटियों की आबरू, सबको मिलकर बचानी होगी।।

समाज में भी हम सबको, इज्जत फिर से कमानी होगी।
मान, सम्मान और मर्यादा को, हम सबको अपनानी होगी।।

सोतन जैसी शराब को, जड़ से अब मिटानी होगी।
जसवंतलाल कहता है, गांववासियों अब कमर कसनी होगी।।

शराब मुक्त करने के लिए, सबको हिम्मत रखनी होगी।।
आप ठान लो, तो सब कुछ संभव हो पाएगा।

शराब बंदी होने से, अब इतिहास बदल जाएगा।।
मंडावर में भी अब राम राज आ जाएगा।।

जसवंतलाल खटीक
कवि, मंडावर- देवगढ़, काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

कवि परिचय : जसवंतलाल खटीक

प्रीत का रोग

प्रीत का रोग लगा मुझे, नींदे उड़ी रात की।
तुम अलबेली शाम हो, मेरे प्यारे गांव की।।
प्रेमरस में खो जाता, इंतजार में कटे रतिया।
हे खुदा उससे मिला, बरसती है ये अंखिया।।
चांद देख उसे याद करू, तारों की मैं सैर करु।
तेरे प्यार में पागल हूँ, सपनो में तेरी मांग भरु।।
तेरी एक झलक पाने, दिन भर मैं राहे तकता।
पागल प्रेमी आवारा मैं, खाना पीना भी तजता।।
तुझसे मैं आँखे मिलाता, शर्म से नैन झुक जाते ।
कोमल हाथो के स्पर्श से, रोम-रोम मेरा महकाते।।
तेरे ख़ातिर जीवित हूँ मैं, तेरे ही सपने बुनता।
चलता अगर मेरा राज, हमसफ़र तुझे चुनता।।
सुनो तुम मेरी बन जाओ, परी बना कर रखूंगा ।
जीवन के इस सफर में, पलकों पे बैठा के रखूंगा।।
बारिश का मौसम सुहाना, आ गयी बरसात भी।
तुम आ जाओ ना सजनी, देर है किस बात की ।।
जसवंत का जीवन अधूरा, आस तेरे साथ की।
तुम अलबेली शाम हो, मेरे प्यारे गाँव की।।

जागरूक सरपंच

जय भवानी जय भवानी, नाम सरपंच प्यारी देवी ।
जय भवानी जय भवानी, सरपंच रूप में समाजसेवी।।
नारी शक्ति को साथ लेकर, साक्षरता की अलख जगायी।
मंडावर में क्रांति लाकर, डिजिटल पंचायत बनायीं।।
सरकार से दिन रात लड़कर, शराब की छुट्टी करायी।
स्वच्छ मण्डावर का डंका बजाके, सबके दिल को भायी।।
बिना लोभ से काम किया, मण्डावर का विकास कराया।
जनता के हित में रह कर, भारत में नाम कमाया।।
पति परमेश्वर जसवंत सिंह ने, हर पल साथ निभाया।
राम सीता की जोड़ी ने मिलकर, मण्डावर में इतिहास रचाया।।
ना ना योजनाएं लाकर, जन जन को लाभ पहुंचाया।
आदर्श पंचायत बनी मण्डावर, देखो सरपंच साहिबा की माया।।
अवार्डों का तांता लग गया, स्वच्छ शक्ति सम्मान ले आयी।
जिधर देखो उधर विकास, मंडावर की काया बदलवायी।।
विकास की राह पर चलकर, सारी कुरीतियों को रोंधा ।
देखो साहिबा की अद्भुत पहल, हर घर में लगा रहे पौधा।।
जय. जय मण्डावर का नारा, अब बच्चा.बच्चा लगाता है।
आदर्श सरपंच प्यारी देवी का, कवि जसवंत गुणगान गाता है।।

मो. : 8505053291
माता-पिता : श्रीमती मांगी देवी, श्री लालूराम खटीक, व. अध्यापक
पत्नी : श्रीमती पूजा कुमारी खटीक, अध्यापिका राप्रावि नवलियापग, छापली
जन्मतिथि : 17 जुलाई 1992
निवास : रतना का गुड़ा, ग्रा.पं. मंडावर, पोस्ट ननाणा, तहसील देवगढ़ जिला राजसमंद (राजस्थान) पिन 313332
शिक्षा : सॉफ्टवेयर इंजीनियर (बीटेक)
व्यवसाय : मातेश्वरी किराणा स्टोर, रतना का गुड़ा

पारिवारिक परिचय : जसवंत के दो भाई और दो बहनें है। पढ़ाई के ततपश्चात उदयपुर के निजी कंपनी में आईटी मैनेजर के रूप में इन्होंने कार्य किया। फिर इनकी शादी के 10 दिन पहले ही कार में सफर के दौरान सड़क दुर्घटना में इनके पिता को लकवा हो गया। इस हादसे के बाद जसवंत ने आईटी मैनेजर की नौकरी छोड़ गांव में ही पिताजी की दुकान संभाल ली। गांव में रहकर जरूरतमंद बच्चों की शैक्षिक व सहशैक्षिक मदद देने के प्रयास शुरू कर दिए। जरूरतमंदों को ड्रेस, स्टेशनरी, मिठाई, स्वेटर के अलावा विद्यालय में अलमारी, ट्रॉफी, प्रसंशा पत्र, पौधरोपण सरीखे सामाजिक सरोकार के कार्य करना शुरू कर दिया।

साहित्यिक जीवन : कविता, निबंध, लेख आदि पढ़ने का शौक तो बचपन से ही था, पर लिखना इसी वर्ष शुरू किया। जसवंत बताते हैं कि जनवरी 2018 की ही बात है, जब हमारे पास की तहसील भीम के मण्डावर पंचायत में शराबबन्दी अभियान चल रहा था। उस समय स्थानीय लेखक गोविंदसिंह जी भागावड़, जो कि 80 फीसदी दिव्यांग है। उन्होंने शराबबंदी पर कविता लिखी और फेसबुक पर पोस्ट कर दी। मैंने भी गूगल से कविता कॉपी करके उन पर कमेंट कर दिया। इस पर श्री गोविंदसिंहजी ने मुझको बोला कि ये कविता कॉपी की हुई है। फिर मैंने झूठ बोल दिया कि नहीं, मैंने खुद लिखी है। फिर उन्होंने मुझको सबूत बताया, तो मुझे आत्मग्लानि हुई कि मैंने झूठ बोला। बस उसी दिन से मैंने सोच लिया कि मैं खुद लिखूंगा और उसी दिन एक छोटी सी कविता लिखी। जनवरी 2018 से आज तक 80 से अधिक कविताएं लिखी है। समय समय पर कई पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित भी हुई।

चारभुजा से राजस्थान गौरवयात्रा का आगाज

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमन्द. मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे व भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने 4 जुलाई को गढबोर में चारभुजानाथ के साथ चार धाम के दर्शन करके और राजसमंद में राजस्थान गौरव यात्रा का रथ रवाना कर चुनावी शंखनाद का बिगुल बजा दिया। राजसमंद में आयोजित सभा में प्रदेशभर से हजारों की तादाद में लोग शामिल हुए। भाजपा द्वारा करीब दो लाख आने का दावा है, जबकि अन्य एजेंसियों ने पौन लाख से सवा लाख तक भीड़ का आंकलन बताया।

शाह ने कहा कि मैं मोदी सरकार और राजे सरकार के काम का हिसाब देने आया हूं। क्योंकि जनता ने लोकसभा की 25 और विधानसभा की 163 सीटें देकर भाजपा को प्रचंड बहुमत दिया। उन्होंने सभा में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की योजनाएं गिन-गिन कर बताई और फिर भाजपा को समर्थन देने का आह्वान किया। शाह ने कहा कि कांग्रेस द्वारा चार साल का हिसाब मांगा जा रहा है, मगर कहता हूं कि वे पहले चार पीढ़ियों का हिसाब दें। इसी तरह मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में हर 5 साल में सरकार बदलने की परम्परा बदलनी होगी। जनता को समझना होगा, तभी हम राजस्थान में विकास की गंगा अनवरत बहा सकेंगे। मुख्यमंत्री ने श्री द्वारकाधीश, नाथद्वारा में श्रीनाथजी व एकलिंगनाथ के दर्शन भी किए। 4 अगस्त को रात्रि विश्राम नाथद्वारा में किया। 5 जुलाई को खमनोर, हल्दीघाटी होकर गौरव रथ यात्रा उदयपुर जिले के गोगुंदा के लिए प्रस्थान कर गया।

22 कार्यों का किया लोकार्पण

कार्यक्रम राजसमन्द जिले में 80 करोड़ के 22 विकास कार्यों का लोकार्पण व 13 शिलान्यास किए गए। इस दौरान इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री सीआर चौधरी, पीपी चौधरी, अर्जुनराम मेघवाल, गृह मंत्री गुलाबचन्द कटारिया, मंत्री राजेन्द्र राठौड़, यूनुस खान, अरूण चतुर्वेदी, किरण माहेश्वरी, श्रीचन्द कृपलानी, भाजपा राष्ट्रीय महासचिव भूपेन्द्र यादव, प्रदेश प्रभारी अविनाश राय खन्ना, सह संगठन मंत्री वी सतीश, अशोक परनामी, सांसद नारायण पंचारिया, सांसद हरिओम सिंह राठौड़ सहित कई जनप्रतिनिधि व आमजन थे।

आनन्दी का ढाई माह में ही तबादला, गुर्जर नए कलक्टर

राजसमंद. करीब ढाई माह बाद आईएएस आनंदी का स्कूल शिक्षा आयुक्त पद पर तबादला हो गया। आईएएस पदोन्नत श्यामलाल गुर्जर ने नए कलक्टर एवं भुवन भूषण ने जिला पुलिस अधीक्षक की कमान संभाल ली। श्यामलाल पहले वर्ष 1999 से 2002 तक अतिरिक्त जिला कलक्टर रह चुके हैं। इधर, राजसमंद से आनंदी का तबादला होते ही कई लोगों में निराशा छा गई, तो कुछ कार्मिक, अफसर भी खुश हो गए। कलक्टर ड्यूटी को लेकर काफी सख्त थी और उनके इसी स्वभाव के चलते ग्राम पंचायत से लेकर जिला स्तर तक के सभी कार्मिक व अफसर न सिर्फ समय पर दफ्तर पहुंचने लग गए, बल्कि हर आहत को तत्काल राहत भी देने लग गए। सोशल मीडिया पर भी खूब विरोध हुआ।

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

अनन्ता इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च सेन्टर

AIMS
एक विश्वास,
बेहतर जिंदगी का

एक विश्वास, बेहतर जिन्दगी का

क्योंकि जीवन के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। अनन्ता अस्पताल समझता हैं कि हमारी जिन्दगी जब भी खतरे में होती है उस समय हर एक पल महत्वपूर्ण होता है। अनन्ता अस्पताल के प्रसिद्ध व कुशल चिकित्सक, प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ एवं टेक्नीशियन की टीम जो आधुनिक नवीनतम चिकित्सा उपकरणों के साथ 24X7 मरीजों की तत्काल देखभाल हेतु सदैव तत्पर रहती है।

सुपर स्पेशियलिटी सुविधाएं :

- न्यूरोसर्जरी
- यूरोलॉजी
- कैंसर
- नेफ्रोलॉजी
- बर्न, प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जरी
- हड्डी व जोड प्रत्यारोपण

मल्टी स्पेशियलिटी सुविधाएं :

- जनरल मेडिसिन
- नेत्र रोग
- जनरल सर्जरी
- मनोरोग
- स्त्री रोग एवं प्रसूती
- चर्म रोग
- बाल एवं शिशु रोग
- दन्तरोग
- नाक-कान-गला
- टी.बी. एंड चेस्ट

अन्य सुविधाएं :

- 1.5 टेस्ला एम.आर.आई.
- लेब की समस्त जाँचे
- 64 स्लाईस सी.टी. स्केन
- 2D ईको एवं 4D सोनोग्राफी
- नियमित डायलिसिस
- NICU, PICU की सुविधा उपलब्ध
- ब्लड बैंक • एम्बुलेंस
- आई.सी.यू. जीवन रक्षक उपकरणों से युक्त

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

- राजस्थान सरकार के सेवारत कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए अधिकृत हॉस्पिटल • ESIC सुविधा

www.anantamedicity.com

TOLL FREE HELP LINE 1800-3000-0023

अनन्ता ग्राम, ने.हा. 8, उदयपुर रोड़, नाथद्वारा - 313202 । फोन : 02953-334000, 97722-78635, 97722-78607

यह उपेक्षा

दिवेर में न तो इतिहास की जानकारी देने वाला कोई बोर्ड, शिलापट्ट या संकेतक है और न ही गाइड नियुक्त है। पर्यटकों को बढ़ावा देने के खास प्रयास नहीं हुए और न ही प्रशासन द्वारा ही कोई ध्यान दिया गया है।

दिवेर @ मैराथन ऑफ मेवाड़

यह है इतिहास

मेवाड़ का काफी हिस्सा मुगल साम्राज्य के हाथों में जा रहा था, तब महाराणा प्रताप ने कालागुमान पंचायत के मनकियावास के जंगल में युद्ध की योजना बनाई। दिवेर व छापली के दर्रों के बीच हुए भीषण युद्ध में महाराणा प्रताप व साथी रणबांकुरों ने मुगल सेना को उल्टे पांव लौटने को मजबूर कर दिया। दिवेर से कुछ दूरी पर घाटी के मुहाने पर दूसरी मुगल चौकी थी, जहां 7.5 फीट ऊंची कद काठी का बहलोल खान मौजूद था। उज़्बेकिस्तान से आया यह सैनिक अकबर की सेना में शामिल हुआ। बहलोल खान का सामना जब प्रताप से हुआ, तो प्रताप ने अपनी तलवार के एक ही प्रबल प्रहार से उसकी टोप, बख्तर, घोड़े की पाखट और घोड़े समेत उसे चीर डाला। दिवेर की घाटी पर प्रताप का आधिपत्य हुआ। फिर प्रताप चावंड को नई राजधानी बना लोकहित में जुट गए। दिवेर से मेवाड़ की स्वतंत्रता की उम्मीद जगी। इस युद्ध ने सिद्ध किया कि प्रताप अपनी शूरवीर, अटल संकल्प के बूते मेवाड़ को आजाद करवाकर ही दम लेंगे। स्वतंत्रता प्रेमी इस शासक ने जीवनभर पग पग पर युद्ध का सामना किया। दिवेर युद्ध में सुल्तान खां के मरने की खबर सुनकर कोशीथल वगैरह थानों के मुगल बिना लड़े ही भाग निकले। दिवेर युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने 15 गांव व 1000 गायें दान कीं। इस युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने पूंचौली गौरा को प्रधान नियुक्त किया। इतिहासकार के अनुसार हल्दीघाटी का युद्ध नैतिक विजय व परीक्षण युद्ध था, तो दिवेर का युद्ध निर्णायक बना। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने दिवेर को मैराथन ऑफ मेवाड़ की संज्ञा दी।

विजय स्मारक मेवा का मथारा दिवेर

छापली युद्ध का महत्व महाराणा प्रताप के इतिहास से जुड़ा है। 1582 में दिवेर छापली युद्ध विजय ने गौरव शाली अमिट इतिहास बना दिया। 36 मुगल ठिकानों पर पुनः आधिपत्य स्थापित हुआ और प्रताप का राज्याभिषेक हुआ। इसके विकास को लेकर सरकार द्वारा मेवाड़ कॉम्पलेक्स योजना में 7 करोड़ 95 लाख का बजट मिला, जिसमें 1.33 करोड़ दिवेर एवं छापली के लिए था। राज्यसभा सांसद विजय गोयल ने 30 लाख रुपए दिए, जिससे ऑडिटोरियम प्रेक्षागृह प्रस्तावित है। अभी दिवेर के मेवा का मथारा पर विजय स्मारक बना हुआ है। इसका लोकार्पण तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा जनवरी 2012 को किया गया था।

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To